सिंगापोरियन फालुन दाफा एसोसिएशन संस्थापन समारोह के दौरान फा की शिक्षा देना

ली होंगज़ी

जुलाई 28, 1996

ठीक है, मैं यहाँ खड़ा होता हूँ ताकि हर कोई मुझे स्पष्ट रूप से देख सके। मैं सिंगापुर के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को धन्यवाद देना चाहता हूँ जिन्होनें विभिन्न तरीकों से फालुन दाफा एसोसिएशन को अपना समर्थन दिया। इसके अलावा, फालुन बुद्ध एसोसिएशन की स्थापना को संभव बनाने के लिए और सिंगापुर के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों द्वारा हमें समर्थन देने के लिए आप सभी की तरफ से, मैं उनके प्रति अपनी प्रशंसा व्यक्त करता हूं।आइए उनका तालियों से स्वागत करें। (*तालियां*) बुद्ध एसोसिएशन की स्थापना से अब अधिक लोगों को फा प्राप्त करने में मदद और पूर्व निर्धारित संबंधों वाले लोगों को फा अध्ययन करने में सहायता मिलेगी। साथ ही यह भविष्य में आप सभी को सामान्य लोगों के लिए अच्छा कार्य करने और अभ्यास के लिए एक बेहतर वातावरण उपलब्ध करायेगा जो राष्ट्रीय कानून के तहत संरक्षित होगा।

मैंने बोलने की ज्यादा तैयारी नहीं की है। अब मैं इस सभा के अवसर का लाभ उठाकर वही कहूंगा जो कुछ मेरे मन में आता है। सबसे पहले मैं फालुन *गोंग* के बारे में बताना चाहूंगा जिसका इतिहास बहुत पुराना है। अध्यात्मिक अभ्यास करने वाले लोग जानते हैं कि मानवीय विश्व में सभ्यताएं एक से अधिक बार उभरी हैं।जब इतिहास के लंबे समय में मानव की नैतिकता में धीरे-धीरे गिरावट आयी और वह भ्रष्ट हो गयी, तब मानव जाति पतन की ओर अग्रसर हुई। और आमतौर पर ऐसा ही होता है। इसके अलावा, जैसा कि यह अंतिम चरण में विकसित हुआ जब भौतिकता और आध्यात्मिकता का ह्रास चरमसीमा पर था, वैसे में मानव के नैतिक मूल्यों में एक बड़ी गिरावट का आना स्वभाविक है। ऐसी परिस्थितियों में, मानव जाति बर्बाद हो जाएगी। मानव जाति ऐसी परिस्तिथियों के माध्यम से कई बार गुजरी है और यही कारण है कि एक से अधिक मानव सभ्यताएं रही हैं—कई सभ्यताएं प्रकाश में आयीं हैं। लोग जिस पाषाण काल की बात करते हैं केवल वही एक ऐसा काल नहीं था। मानव जाति कई पाषाण कालों से निकली है। ऐसा इसलिए है क्योंकि जब भी मानव जाति ने इस तरह की मुसीबतों का सामना किया तब उत्पादन और ज्ञान के सभी साधन नष्ट हो गए।

आप जानते हैं, वर्तमान मानव सभ्यता की शुरुआती अवधि में—चार या पांच हजार वर्ष पूर्व—हमारी धरती पर एक भयंकर बाढ़ आई, और इसने यूरोप में पूरे कॉकेशियन सभ्यता को अपनी आगोश में ले लिया। बेशक, कुछ कीमती वस्तुएं रह गई थीं, हालांकि अब भी उन कलाकृतियों के माध्यम से प्रागैतिहासिक अतीत की झलक देखी जा सकती है। उदाहरण के तौर पर, प्राचीन ग्रीस की संस्कृति से जुड़े पुरातात्विक खोजों में प्रागैतिहासिक सभ्यताओं के अस्तित्व का सबूत देखा जा सकता है।पूर्व देशों में, अपेक्षाकृत अधिक वस्तुएं विनाशकारी बाढ़ से बच गयीं। हर कोई बाढ़ को नियंत्रित करने वाले महान यू (YU) की कहानी जानता है।उस समय बाढ़ एक भयंकर रूप में थी, और जब पानी का स्तर नीचे आया, महान यू ने लोगों को बाढ़ वाली भूमि से पानी बाहर निकालने का मार्गदर्शन किया। यह इतिहास में दर्ज है।उस समय प्राचीन मानव सभ्यता—अंतिम कालचक्र वाली—भारी बाढ़ से नष्ट हो गयी, लेकिन चीनी लोगों के कई पूर्वज भयंकर बाढ़ से बच निकले और अपेक्षाकृत अधिक कलाकृतियों भी पीछे रह गयीं। इसकी तुलना में, बहुत कम पश्चिमी लोग बच पाये।यही कारण है कि आज की पश्चिमी संस्कृति पूरी तरह से नयी है। प्राचीन इतिहास के किसी भी लेशमात्र निशान के बिना जो पूरी तरह से नयी है ।इस प्रकार, चीन की प्राचीन सभ्यता का गहरा इतिहास है और इसी कारण आधुनिक विज्ञान की तुलना में चीनी सभ्यता ने एक अलग रास्ता अपनाया है।

तो इन प्राचीन सभ्यताओं में, ऐसी कई वस्तुएं हैं जो आजकल के लोग समझने में असमर्थ हैं और आधुनिक संस्कृति से भिन्न हैं। इसलिए, पश्चिमी लोगों समेत कई लोग जानते हैं कि चीन में कई रहस्यमय

वस्तुएं हैं—ऐसी वस्तुएं जो आज के लोग समझ नहीं सकते हैं।चीनी लोग स्वयं यह जानते हैं।चीन की भूमि पर, प्राचीन संस्कृति की कई वस्तुएं हैं जिन्हें आधुनिक लोगों द्वारा समझा नहीं जा सकता है। कुछ लोगों ने उनके बारे में सुना है और उन्हें देखा है, फिर भी वे उन्हें समझा नहीं सकते हैं, और किसी ने इन प्राचीन वस्तुओं को सार्वजनिक करने और लोगों को बताने के लिए अभी तक कोई भी काम नहीं किया है। चूंकि चीनी लोगों के पूर्वजों में से अधिकांश [बाढ़ के दौरान] जीवित बच गए, प्राचीन संस्कृति का एक हिस्सा संरक्षित रह गया है।

अतीत में, प्राचीन चीनी प्रजाति आज की पीली नदी की घाटी में केंद्रित नहीं थी; इसके बजाय, यह शिनजियांग क्षेत्र में स्थित थी।यह उस क्षेत्र में उस सभ्यता के लिए सबसे समृद्ध अवधि हुई।कुंलुन पर्वत नजदीक था और इस वजह से पास के क्षेत्र काफी ऊंचे थे। उस वर्ष भयंकर बाढ़ का जल स्तर दो हजार मीटर तक पहुंच गया, जिससे पूरी पृथ्वी जलमग्न हो गयी। लेकिन जब बड़ी भयंकर बाढ़ आयी, तब प्राचीन संस्कृति की कुछ वस्तुएं संरक्षित करते हुए कई लोगों ने कुंलुन पर्वत पर चढ़कर अपनी-अपनी जान बचाई। उदाहरण के लिए, हेतु और लोशु आकृतियां, तायजी, मूल आठ ट्रायग्राम (बगुआ), और अन्य वस्तुएं जो चीन में कुछ लोग अभी भी समझ नहीं सकते हैं, साथ ही *चीगोंग* के कुछ प्राचीन रूप जिनके बारे में आज के लोग जानते हैं.

सीधे शब्दों में कहें तो *चीगोंग* ऐसा नहीं है जिसका आज के लोगों ने आविष्कार किया है। यह प्रागैतिहासिक संस्कृति का हिस्सा है और चीन में अपेक्षाकृत अधिक है।लेकिन अतीत में इसे *चीगोंग* नहीं कहा जाता था।तो फिर इसे क्या कहा जाता था? इसे साधना अभ्यास (शियुलिआन) कहा जाता था। बेशक साधना अभ्यास कई स्तरों में विभाजित है और साधारण मानव समाज के स्तर पर, लोगों को सिर्फ अपने-आप का उपचार करना, कैसे स्वस्थ रहा जाए, या अपने शरीर को कैसे स्वस्थ रखा जाए यही बताया जा सकता है। इसलिए कुछ *चीगोंग* गुरुओं ने इसका इस्तेमाल लोगों के उपचार के लिए किया। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो, वे *चीगोंग* गुरु, जो अपने अभ्यासों को समाज में फैलाना चाहते हैं और वे भी जो दूसरे देशों में गए हैं, स्वास्थ्य और स्वस्थ रहने के स्तर पर ही सिखा रहे हैं। अभी मैं यह नहीं कह रहा हूं कि *चीगोंग* अभ्यास जो अन्य लोग सिखा रहे हैं वह सही नहीं है। मैं कह रहा हूं कि उन्होंने इसे उच्च स्तरों पर नहीं सिखाया है, बल्कि वे सिर्फ उपचार और स्वस्थ रहने की वस्तुएं सिखाते हैं और उन्होंने इसे कुछ अलौकिक शक्तियों के साथ जोड़ दिया है। जब उपचार करते, कुछ बीमारियां सिर्फ अलौकिक माध्यमों द्वारा ही ठीक की जा सकती थीं और इसी कारण, कुछ अलौकिक शक्तियों को प्रदर्शित किया जाता है।

"अलौकिक शक्तियां" केवल एक आधुनिक शब्द है, और मूल रूप से यह जन्मजात शक्तियों को संदर्भित करता है। वर्तमान में भौतिकता की बढ़ती हुई अधिकता और विज्ञान की प्रगति के साथ, लोग भौतिक वस्तुओं को सबसे ज्यादा महत्व देने लगे हैं। और जो वस्तुएं उनके साथ पुरातन काल से रही हैं वे अपनी उन जन्मजात क्षमताओं को ही त्यागने लगे हैं। यदि ऐसी ही प्रवृति रही तो भविष्य में विज्ञान और तकनीकी की संभवतः प्रगति होगी, किन्तु मानव जाति पतन की ओर अग्रसर होगा। अब रेलगाड़ियों, कारों, हवाई जहाज़ों के कारण ज्यादा चलना नहीं पड़ता है। भविष्य में भी भौतिकता के बढ़ने से मानव जाति का तेज़ी के साथ पतन हो सकता है। यदि हम "विकास के सिद्धांतों" के आधार पर सोचें तो भविष्य में मानव शरीर पूरी तरह से लुप्त हो जाएगा और अंत में शरीर के अंग विकृत और नाममात्र रह

जाएंगे, केवल बड़ा सिर बच जाएगा। वास्तव में, मैं केवल एक उदाहरण दे रहा हूं। तात्पर्य यह है कि अधिक से अधिक मानव की अंतर्निहित जन्मजात, मूल गुणों को त्यागा जा रहा है।

चीन की प्राचीन सभ्यता इस तरह विकसित नहीं हुई थी। तो कुछ लोगों को आश्चर्य हो सकता है, "अगर वस्तुएं प्राचीन चीनी सभ्यता के हिसाब से विकसित होतीं, तो क्या तकनीकी विकास होता?" बिल्कुल, यदि आप दूसरे प्रकार के विज्ञान को वर्तमान के विज्ञान और तकनीकी सिद्धांतों के आधार पर समझने की कोशिश करेंगे, तो आप इसे कभी समझ ही नहीं पाएंगे। दूसरे प्रकार के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को समझने के लिए आपको वर्तमान वैज्ञानिक बंधनों से बाहर निकलना होगा। और दूसरे प्रकार की संस्कृति के अंदर लोग सोचेंगे कि वास्तव में यही समाज की अवस्था है। कुछ लोग कहते हैं, " यदि वस्तुएं प्राचीन पूर्व को ध्यान में रख कर विकसित होतीं, तो क्या कारें और हवाई जहाज़ होते? मैं कल सिंगापुर से हॉन्ग-कॉन्ग हवाई जहाज से आया और मुझे मात्र तीन घंटे लगे। यह तेज़ था! मानव जाति बहुत उच्च स्तर पर विकसित हुई है। क्या ऐसा ही होता यदि वस्तुएं प्राचीन चीनी सभ्यता के आधार पर होतीं?"

वास्तव में लोग जानते हैं कि अलग प्रकार की वैज्ञानिक पद्धितियां विभिन्न प्रकार के वैज्ञानिक विकास के रास्ते खोल सकती हैं। उदाहरण के लिए यदि वस्तुएं प्राचीन चीनी सभ्यता के अनुसार विकसित होतीं। जैसा कि आप जानते हैं, *चीगोंग* अभ्यास मानव शरीर के जन्मजात क्षमताओं को विकसित कर सकता है। दूसरे शब्दों में, *चीगोंग* अभ्यास अमूर्त वस्तुओं को मूर्त वस्तुओं में बदल सकता है, और अंत में अप्रत्यक्ष को प्रत्यक्ष कर सकता है, और यह सब किसी भी उपकरणों या आधुनिक वैज्ञानिक या तकनीकी साधनों के बिना किया जा सकता है।

जब आप *चीगोंग* अभ्यास की ध्यान अवस्था में प्रवेश करते हैं, आपको कुछ अनुभूति नहीं होती। लेकिन जब आप पूरी तरह से शांत अवस्था में पहुंच जाते हैं, आपको ज्ञात होता है कि यद्यपि आपके शरीर का बाहरी रूप गतिमान नहीं हो रहा है, आपका आंतरिक शरीर गतिमान हो रहा है; आपको आंतरिक गति अनुभव होगी। और वह गति, बाहर से समझ नहीं आएगी, यह स्पष्ट होता जाएगा और अंततः इतना स्पष्ट कि आपकी चेतना इसे नियंत्रित कर पाएगी और इस प्रकार अमूर्त से मूर्त रूप में आ पाएगी। तो आखिरकार, जैसे-जैसे अभ्यासी आगे बढ़ेगा यह चेतना और संवेदना धीरे-धीरे मूर्त होती जाएगी। अभी भी कई पदार्थ हैं जिनमें ऊर्जा होती है, और जो ब्रम्हाण्ड में मौजूद हैं जिसे आज का विज्ञान और तकनीक पता नहीं लगा पाते हैं। जैसे-जैसे ये शक्तियां लगातार अभ्यासियों को प्रबल बनाती हैं, ये अदृश्य, निराकार पदार्थ धीरे-धीरे मूर्त होते जाते हैं, और तब लोग उसे देख सकते हैं और यहां तक कि उपयोग भी कर सकते हैं। यदि इस पथ का पालन किया जाता है, तो निश्चित रूप से मनुष्य की गुणवत्ता बढ़ जाएगी। अतीत में छात्रों को कन्फ्यूशियस विद्वान कहा जाता था और कक्षा से पहले उन्हें ध्यान में बैठना होता था, सांसों को नियंत्रित करने और किताबें पढ़ने से पहले मन को शांत करना होता था। वास्तव में अतीत में यह इसी प्रकार होता था। प्राचीन चीन में सांसों को नियंत्रित करना और मन को शांत करना सभी इंसानों के लिए महत्वपूर्ण था। उस अवस्था में रहते हुए, लोग कई सारी ऐसी वस्तुएं कर सकते थे जो आमतौर पर वे नहीं कर पाते हैं और यही है *चीगोंग* अभ्यास के नज़दीक पहुंचना। इस तरह की संस्कृति हमेशा प्राचीन चीनी लोगों के मन में रहती थी।

वास्तव में, मैंने अभी उल्लेख किया है कि ऐसे लोग हैं जो आश्चर्य करते हैं, "अगर विकास के इस मार्ग का पालन किया गया होता, तो क्या हवाई जहाज और रेलागाड़ियां होतीं?" विभिन्न प्रकार के वैज्ञानिक विकास विज्ञान को विभिन्न दिशाओं में ले जा सकते हैं।तो इसके बारे में सोचो, हर कोई: यदि मानव हवा

में उड़ सकते, तो क्या तब भी हवाई जहाज़ और रेलगाड़ियों की आवश्यकता होती? इस तरह की शक्तियों वाले लोग चीन, भारत और अमेरीका में हैं, और इस तरह के लोग फालुन गोंग अभ्यासियों में बहुत हैं। वे इस तरह की शक्तियां कैसे हासिल कर लेते हैं? जब किसी की सभी शक्ति-नाड़ियां खुल जाती हैं—जब कोई भी जगह अवरुद्ध नहीं होती है —तो इंसान उड़ सकता है। निःसंदेह, आज के वैज्ञानिक शोध नहीं बता सकते कि यह कैसे संभव है? वास्तव में, परिहास के डर से कोई भी इसका शोध करने का साहस नहीं करता—और इसलिए अपनी प्रतिष्ठा खो रहे हैं—उन तथाकथित "वैज्ञानिकों" द्वारा जो इसमें विश्वास नहीं करते हैं । जैसा कि आप जानते हैं, कुछ समय पहले एक अमेरिकी सिंगापुर में एक कार्यक्रम करने के लिए आया और बहुत से लोगों ने उसे उड़ते हुए भी देखा होगा। ऐसा वास्तव में होता है—मानव उड़ने में सक्षम है। ज़रा सोचिये, सभी, अतीत में चीनी लोग बातें करते थे कि कोई अचानक कहीं से प्रकट हो जाता है और गायब हो जाता है। कई *चीगोंग* गुरु इस स्थान से उस स्थान पर जा सकते हैं—हज़ारों मील की दूरी—केवल कुछ ही सेकेंड में। वे ऐसा कैसे कर लेते थे? बेशक, ऐसी बहुत-सी अंजान वस्तुएं हैं जिनके बारे में विस्तार से बताने की आवश्यकता है, लेकिन आज मैं उनके बारे में नहीं बताऊंगा। मैं व्यापक रुप से केवल यह कहना चाहता हूं कि विभिन्न प्रकार के वैज्ञानिक विकास अलग-अलग परिणाम लाते हैं। उदाहरण के लिए, हवाई जहाज़ से आप मात्र तीन घण्टों में हॉन्ग-कॉन्ग से सिंगापुर जा सकते हैं, लेकिन कोई उड़ने के लिए बैठता है और मात्र दस मिनटों में वह उड़कर पहुंच सकता है। तो उसे इस तरह की बेढ़ंगी मशीन बनाने की आवश्यकता नहीं। जब इस तरह की बातें होती हैं, वे वास्तव में कोई परिकथाएं नहीं हैं और विज्ञान ने धीरे-धीरे ऐसी बहुत-सी वस्तुओं की पुष्टि की है जिन्हें लोग समझा नहीं पाते हैं। यदि आप उस अवस्था तक पहुंचने में सक्षम हो भी जाते हैं, फिर भी आप उस पथ के विज्ञान को आज के विज्ञान के संदर्भ से नहीं समझ पाएंगे।

वास्तव में, आधुनिक तौर पर देखा जाए तो, *चीगोंग* एक वैज्ञानिक मार्ग है। इसके अतिरिक्त, यह उच्च स्तर का एक बहुत प्राचीन विज्ञान है। बहुत से वैज्ञानिकों ने आगे आने का साहस किया है और मानव शरीर और प्राचीन विज्ञान की पुष्टि भी की है, क्योंकि उन्होंने वास्तविक *चीगोंग* के अस्तित्व का प्रत्यक्ष रुप देखा है।

हालांकि, ऐसे लोग हैं जो *चीगोंग* के अस्तित्व को नहीं स्वीकारते हैं । मैं यहां उपस्थित सभी फालुन गोंग अभ्यासियों को बताना चाहूँगा कि जब आप किसी को फालुन गोंग सीखने के लिए बुलाते हैं, कुछ लोग इस पर विश्वास नहीं करेंगे और हो सकता है इसका विरोध भी करें। यह सब सामान्य है। क्यों? क्योंकि मानव समाज परस्पर विरोधाभास की स्थिति में होता है। यदि, सभी *चीगोंग* में विश्वास करेंगे, यदि सभी बुद्ध फा में विश्वास करेंगे, और यदि सभी अभ्यास कर सकेंगे, तो मानव समाज का अस्तित्व ही नहीं रहेगा, और सभी दैवीय प्राणी और भगवान बन जाएंगे। निश्चित रूप से क्योंकि ऐसे लोग हैं जो इसके विरोधी हैं और जो इसके साथ हैं, जो इस पर विश्वास करते हैं और जो नहीं, इसलिए यह मतभेदों और परस्पर निर्माण और परस्पर विरोध वाला समाज बन सकता है। सभी व्यवसाय और सभी व्यापार, साधारण समाज में उपस्थित सभी वस्तुओं में दोनों सकारात्मक और नकारात्मक तत्व एक साथ विद्यमान होते हैं। जब आप कुछ अच्छा करना चाहते हैं, तो निश्चित ही कोई बुरी वस्तु आपकी प्रतीक्षा कर रही होगी, और इससे पहले कि आप उस अच्छी वस्तु को पूरा कर सकें आपको उन चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। और बेशक, बुरी वस्तु करना भी आसान नहीं है, क्योंकि कानून व्यवस्था और अच्छे लोग इसको रोकने के लिए रहते हैं। तो वस्तुएं इसी तरह होती हैं, जो कि सामान्य है। क्योंकि इस ब्रम्हाण्ड में, विभिन्न प्रकृति के दो विरोधी पदार्थ हैं, उनके नीचे की ओर विस्तार *ताइजी* के सिद्धांत को जन्म देता

है—*यिन* और *यांग*। जैसे-जैसे यह नीचे की ओर विस्तार करता है, परस्पर निर्माण और परस्पर विरोध के नियम का उद्गम होता है। परस्पर निर्माण और परस्पर विरोध का नियम साधारण मानव समाज में सबसे प्रमुख रूप से प्रदर्शित होता है। यही कारण है कि ऐसे लोग हैं जो प्राचीन विज्ञान में विश्वास नहीं करते हैं, जिनकी मैंने अभी बात की है और जो विश्वास करते हैं। यह बुद्ध फा अभ्यास के लिए भी है, जिसका मैं आज संचार कर रहा हूं : ऐसे भी लोग हैं जो इसका समर्थन करते हैं और जो इसका विरोध करते हैं, और यह सामान्य बात है। मैंने जो कुछ बताया है, आप सभी इसका सामना करेंगे, और मुझे लगता है कि यह चिंता का विषय नहीं है।

फालुन गोंग के इतिहास के बारे में बताने से पहले मैंने इस विषय पर आगे और इस हद तक बात की। आज जिस *चीगोंग* को लोग जानते हैं वह एक प्राचीन विज्ञान भी है। इसमें फालुन गोंग सम्मिलित है, जो प्रागैतिहासिक संस्कृति से है। ऐसा नहीं है कि ली होंगज़ी ने इसे अभी बनाया हो और आप सभी को बताया हो। तब इससे लोगों को क्षति पहुंचती। अब कई नकली *चीगोंग* गुरु हैं जो लोगों को धोखा देते हैं, और वे दूसरों के साथ-साथ स्वयं को भी हानि पहुंचा रहे हैं। चूंकि आम तौर पर जब *गोंग* उत्सर्जित होता है तो यह इस आयाम में व्यक्त नहीं होता है, इसलिए मानवीय आंखें इसे देखने में असमर्थ होती हैं, और इसलिए कई नकली *चीगोंग* गुरु हैं जो लोगों को धोखा देते हैं। यह ऐसा ही है कि मछली की आंखें मोतियों के साथ मिश्रित हो गयी हों—असली और नकली आपस में मिल गए हों। शुरुआत में बहुत से लोग थे जो *चीगोंग* में विश्वास नहीं करते थे, और अब वे इसका और भी विरोध करते हैं। विशेष रूप से, आज के लोगों की नैतिकता भ्रष्ट हो गयी है, *चीगोंग* का क्या कहें आज-कल तो प्रत्येक वस्तु के असली और नकली संस्करण दोनों हैं—यहां तक कि बाज़ारों में भी नकली सामान है। बेशक, *चीगोंग* कुछ ऐसा नहीं है जिसे कोई भी बना सके और इससे लोगों को धोखा दे—ऐसा करने से अन्य लोगों के साथ-साथ उस व्यक्ति को भी हानि होगी। क्योंकि धोखेबाज़ नहीं जानते कि इसका अभ्यास करने से क्या होगा। बेशक, यदि उससे कुछ नहीं होगा, तो कोई बात नहीं। लेकिन यदि उससे वास्तव में कुछ होता है, तो लोगों को संकट की स्थिति में डाल सकता है। नकली *चीगोंग* अभ्यास लोगों के लिए इसी तरह के संकट लेकर आ सकता है।

तब फालुन गोंग कहां से आया? और कब आया? अगर कोई इसका इतिहास जानना चाहेगा, तो, यह अविश्वसनीय रूप से लंबा होगा, और जब साधारण लोग इसके बारे में सुनेंगे तो उन्हें यह अविश्वसनीय लगेगा। तो मैं अब उन वस्तुओं के बारे में बात नहीं करूंगा, लेकिन धीरे-धीरे आपको पता चल जाएगा। लेकिन मैं आपको बता सकता हूं कि मानव जाति के लिए प्रागैतिहासिक काल में, फालुन गोंग ने एक बार बुद्ध फा के रूप में विश्वभर में लोगों को बचाया। ठीक वैसे ही जैसे शाक्यमुनि ने पच्चीस सौ साल पहले लोगों को बचाया था, फालुन गोंग ने भी पृथ्वी पर सभी को मोक्ष की राह दिखायी थी। इतिहास की एक बहुत लंबी अवधि बीत चुकी है जब इसे मानव जाति के लिए सार्वजनिक किया गया था। इतिहास पहले से ही बहुत बदल चुका है और इसलिए आज के लोगों के लिए उसके बारे में जानने की संभावना कम हो जाती है। फालुन गोंग का इतिहास बहुत लंबा और चिरकालीन है।

तब इसे अभी सार्वजनिक क्यों किया गया है? बेशक, मैं इसे सिर्फ संक्षिप्त और सतही तौर पर ही समझा सकता हूं। मैंने यह स्थिति देखी। कैसी स्थिति? अर्थात, मानव समाज ने भौतिक वस्तुओं की बढ़ती प्रचुरता और विज्ञान के तेज़ विकास को देखा है, जबकि मानव नैतिकता में बहुत तेज़ी से गिरावट आई है। क्योंकि लोग आज विज्ञान में विश्वास करते हैं, उन्हें लगता है आधुनिक विज्ञान,सत्य पर निहित है। लेकिन लोगों को यह समझ नहीं है, अर्थात, आधुनिक विज्ञान अधुरा है। ऐसी बहुत-सी वस्तुएं हैं जिसका

विज्ञान पता नहीं लगा पाया है, और बहुत सी वस्तुओं को विज्ञान ने अस्वीकृत भी कर दिया है। और ऐसे संकीर्ण सोच वाले बहुत से लोग हैं जो इस त्रुटिपूर्ण विज्ञान का सहारा लेकर ऐसी घटनाओं पर प्रहार करते हैं, जिन पर लोग विश्वास करते हैं और जो अभी तक विज्ञान द्वारा समझायी नहीं जा सकी है। हालांकि, मानव समाज के इस भौतिक आयाम में उन अतुलनीय घटनाओं को ठोस और वास्त्विक रूप में प्रत्यक्ष देखा गया है। आधुनिक विज्ञान को उन्हें स्वीकार करने का साहस नहीं है। क्योंकि विज्ञान उन्हें नहीं स्वीकारता, बहुत से लोग जो विज्ञान में विश्वास करते हैं और जिनकी ऐसी ही धारणा है, वैसे लोग इसका विरोध करते हैं। लेकिन यह विज्ञान अत्यधिक त्रुटिपूर्ण है। उदाहरण के लिए, हज़ारों वर्षों से लोग विश्वास करते हैं कि सद्गुण महत्वपूर्ण है। आज कल बहुत से लोग सोचते हैं "सद्गुण" केवल मन की एक उपज है और आध्यात्मिक परिप्रेक्ष्य लोगों को उस तक पहुंचने की अपेक्षा है—और उन्होंने इससे ज्यादा कुछ नहीं सोचा। लेकिन मैं आपको बता रहा हूं कि इस ब्रम्हाण्ड में सभी कुछ भौतिक रूप से बनाया गया है, जिससे यह वस्तुओं में भूमिका निभा सकता है। वास्तव में सद्गुण का भौतिक अस्तित्व है और यह ठोस और वास्तविक भूमिका निभाता है। अतीत में, पूर्व के लोग, विशेष रूप से वृद्ध चीनी प्रमुखता से सद्गुण को बढ़ाने में विश्वास रखते थे। युवा इसे नहीं समझ पाते हैं। "सद्गुण को क्यों बढ़ाना चाहिए? आप सद्गुण को कैसे बढ़ा सकते हैं?" "आप उस वस्तु को कैसे बढ़ा सकते हैं जिसका कोई स्वरूप नहीं है?" वास्तव में, मैं आपको बताना चाहुंगा कि इसका स्वरूप है, केवल मानवीय आंखें उसे नहीं देख सकतीं क्योंकि उसका अस्तित्व दूसरे आयाम में है और उसका अस्तित्व हर क्षण रहता है। जब आप अच्छी वस्तुएं करते हैं, आपका सद्गुण बढ़ता है। और जब कठिनाइयों का सामना करते हैं तो आपका सद्गुण और बढ़ता है। यह जन्म-जन्मांतर साथ रहता है, और बहुतायात में आपका भविष्य भी निर्धारित करता है। इसके कारण कुछ लोग उच्च अधिकारी बनते हैं, इसके कारण ही कुछ लोग धन प्राप्त करते हैं, और कुछ सफल व्यवसायी बनते हैं। आपके पूर्व जन्मों या पिछले अर्जित सद्गुणों के कारण ही आपको वर्तमान में सौभाग्य प्राप्त होता है। क्यों बहुत से लोग दूसरों से कम भाग्यशाली होते हैं? निश्चित रूप से क्योंकि उनके पास दूसरों जितना सद्गुण नहीं होता, क्योंकि उन्होंने उतना सद्गुण नहीं बनाया। यही कारण है। इसलिए सद्गुण अत्यधिक महत्वपूर्ण है। अभी मैंने विज्ञान की त्रुटियों के बारे में बताया। आज का विज्ञान इस विद्यमान भौतिक आयाम को तोड़ने में असमर्थ है जिसमें मानव जाति रहती है और यह दूसरे आयामों का पता नहीं लगा सकता। लेकिन कई विशेष लोग हैं, असाधारण वैज्ञानिक जिन्होंने दूसरे काल-अवकाशों के अस्तित्व का अनुभव किया है। हालांकि वे अभी तक कोई विशेष प्रगति नहीं कर पाये हैं, उनके पास अन्य काल-अवकाशों का एक मोटा सैद्धांतिक स्पष्टीकरण है और उन्होंने उन प्रश्नों को पूछा है—और वे अन्य काल-अवकाशों के अस्तित्व में विश्वास करते हैं। तब, क्या उन काल-अवकाशों में जीवन है? वे कैसे दिखते हैं? उनका अस्तित्व किस रूप में है? उनके और हमारे आयाम में समय का अंतर कितना है? उस आयाम में कैसी अवधारणाएं हैं, वहां लोग किस तरह देखते हैं और वहां के पदार्थ का कैसा रूप है—वे किस तरह हैं? यह सब वर्तमान के मानव विज्ञान को ज्ञात नहीं है। आधुनिक विज्ञान दूसरे आयामों के अस्तित्व पर पुष्टि नहीं करता और न ही सद्गुण के अस्तित्व की पुष्टि करता है।

ज़रा सोचिए, जब मानव दृढ़ता से विज्ञान में विश्वास करता है, वे किसी और वस्तु में विश्वास नहीं रखेगा जिसे विज्ञान ने नकार दिया हो। तो, मानव मूल्यों की अत्यधिक गिरावट के लिए विज्ञान उत्तरदायी नहीं है? कारण यह है, जब लोग सद्गुण की बात करते हैं और उसे बढ़ाने और सम्मान करने के लिए कहते हैं, आधुनिक सोच वाले कई लोग कहेंगे, "आप अंधविश्वास की बेतुकी बातें कर रहे हैं। यह सब अंधविश्वास है। हम विज्ञान में विश्वास करते हैं, उस तरह के अंधविश्वासों में नहीं।" देखिए, सब लोग,

मानव जाति के महत्वपूर्ण हिस्से को दबाने के लिए विज्ञान का उपयोग एक छड़ी के रुप में कर रहे हैं। तो, क्या आप कह सकते हैं कि विज्ञान परिपूर्ण है? जैसा कि मैंने अभी बताया, मानव का भौतिक जीवन बहुत उन्नत है । तो नैतिकता क्यों गिरती जा रही है? निश्चित ही क्योंकि आज का विज्ञान अन्य आयामों और दिव्य जीवों का अस्तित्व बताने में असमर्थ रहा है, मानव जाति का पुनर्जन्म और कर्मों का भुगतान बताने में असमर्थ रहा है और सद्गुणों का अस्तित्व बताने में असमर्थ रहा है। इसी कारण लोग कोई भी बुरा कार्य करने की धृष्टता कर बैठते हैं। आज कल कई लोग विश्वास करते हैं, "यह सब अंधविश्वास और अवैज्ञानिक है।" लोग ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास नहीं करते हैं और इसी कारण वे कोई भी बुरे कार्य करने की धृष्टता कर बैठते हैं। वे कर्मों के भुगतान करने में विश्वास नहीं करते और इसलिए वे सोचते हैं कि यह सब अंधविश्वास है। यह सबसे विकट स्थिति है जो आधुनिक विज्ञान की कमी के कारण उत्पन्न हुई है।

क्योंकि मैं वही कह रहा हूं जो अभी मेरे मन में आ रहा है, जब मैं फालुन गोंग की उत्पत्ति के विषय पर आया तो मैं ने इस स्थिति पर विस्तार पूर्वक बात की।

अध्यात्मिक समुदाय में ऐसी बहुत-सी वस्तुओं के बारे में विचार किया जाता है जिसे साधारण मानव समाज में बताया नहीं जा सकता। लेकिन साधारण मानव समाज में, ऐसे बहुत से लोग हैं जिन्होंने कुछ वस्तुएं देखी या सुनी हैं; उन्होंने कभी-कभी कुछ अतुलनीय रूप से देखा या महसूस किया हो सकता है, या उन्होंने कुछ असामान्य का सामना किया हो। फिर भी किसी ने कभी भी इन वस्तुओं को सत्यापित करने और व्यवस्थित रुप से अध्ययन करने का प्रयास नहीं किया।

कुछ समय पूर्व, यहां मंच पर एक शिष्य था जिसने कहा कि यह फा अत्यधिक अनमोल है। यहां मैंने आपको इतना कुछ बताया है, तो जिन्होंने *ज़ुआन फालुन* नहीं पढ़ी है, वे इसे पढ़ना चाहेंगे, और आप यह सब समझ पाएंगे [जिसकी मैं बात कर रहा हूं]। *ज़ुआन फालुन* में फा के सिद्धांत हैं, और वास्तव में, फा सभी अभ्यासियों को मिलना चाहिए। कई लोग सोचते हैं कि साधना कठिन है। वास्तव में, साधना कठिन नही है; साधारण मानव सोच और मोहभावों को त्यागना अत्यंत कठिन है। साधारण मानवीय सोच क्या है? उदाहरण के लिए, पहली वस्तु जो अभ्यासी कर सकता है वह है जब कोई प्रहार करे तो उसे प्रति उत्तर देने से स्वयं को रोकें और जब कोई क्रोध करे तो उस पर क्रोधित होने से स्वयं को रोकें। साधारण लोग ऐसा नहीं कर पाएंगे क्योंकि वे साधारण लोग हैं। हालांकि, अभ्यासी को यह करना चाहिए। इसके अतिरिक्त, आपको निम्न वस्तुएं भी करनी चाहिए : जब कोई आपको दबाने की कोशिश करे, तो आपको कोई शिकायत नहीं होनी चाहिए और कोई द्वेष नहीं रखना चाहिए। उसे सरलता से लेना चाहिए, और आपको उसे हँसकर टाल देना चाहिए और भूल जाना चाहिए; या जब कोई आपको मारता है, तो आपको उसे हृदय से धन्यवाद देना चाहिए। साधारण लोग सोचेंगे कि यह असंभव है, "ऐसा कोई कैसे कर सकता है? वह कोई डरपोक ही होगा।" लेकिन वास्तव में, जब कोई आपको दबाता है, वह आपको सद्गुण दे रहा है—वास्तविक और सच्चा सद्गुण। इस ब्रम्हाण्ड में, इतने विशाल पदार्थ हैं जिसे मानव अपनी खुली आंखों से नहीं देख सकता और आज का विज्ञान भी उसका पता नहीं लगा सकता। ऐसे बहुत से अत्यंत सूक्ष्म पदार्थों में विवेक और जीवन है और वे अपने अंतर्गत सभी जीवों को नियंत्रित करते हैं। और साथ ही इस ब्रम्हाण्ड में सभी वस्तुओं का संतुलन बनाए रखते हैं। इसके अतिरिक्त, इस ब्रम्हाण्ड का नियम है, वस्तुतः, बिना हानि के कोई लाभ नहीं, और लाभ के लिए आपको कुछ खोना पड़ता है। जब कोई कुछ चाहता है, तो लेन-देन होगा, और उसी को "लाभ और हानि" कहा जाता है। इस आयाम में, साधारण लोग इसे देख नहीं सकते, हालांकि, कभी-कभी वे इसका अनुभव कर

सकते हैं। सामान्यतः स्वयं को कठिन प्रयासों में लगाने के बाद लोगों को वह मिलेगा जो वे चाहते हैं। वे लोग जो कठिनाइयां नहीं सहना चाहते हैं और बलपूर्वक वो पाना चाहते हैं जो उन्हें चाहिए, प्रकृति उन्हें ऐसा नहीं करने देगी। उदाहरण के लिए, कोई किसी से कुछ वस्तुएं लेता है या किसी को मारता है। यह उसका उदाहरण है जब कोई किसी से बल पूर्वक या अन्यथा कुछ लेना चाहता है और वह उसके शुल्क का भुगतान करने की नहीं सोचता है। लेकिन, ब्रम्हाण्ड बलपूर्वक इसका भुगतान करवाएगा; न चाहते हुए भी उसको हानि होगी। किस प्रकार की हानि? इस तरफ आपने किसी को मारा, किसी का लाभ उठाया, या कुछ लिया जो आपका नहीं है। तो आपने जितना भी लाभ उठाया होगा उतना ही सद्‌गुण दूसरे आयाम में आपके शरीर से दूसरे के शरीर में चला जाएगा और आपको भौतिक या वित्तिय लाभ के लिए सद्‌गुण की भरपाई करनी पड़ेगी । दूसरे शब्दों में, जब किसी को बल पूर्वक कुछ खोना पड़ता है, तो दूसरे को उसकी भरपायी करनी पड़ेगी। साधारण लोग यह नहीं देख सकते, इसलिए वे बुरी वस्तुएं करने की दृष्टता करते हैं। कई लोग व्यवसाय में दूसरों द्वारा ठगे जाते हैं या बल पूर्वक हानि सहते हैं, लेकिन यह उनके साथ इस वजह से नहीं हुआ है कि उन्होंने किसी गलत कार्य के कारण अपने सद्‌गुण की हानि की हो, तो समय के साथ उन्हें उतना ही भुगतान मिलेगा। और यही भुगतान है जिसे उन्हें बल पूर्वक करना होता है जिसकी हानि वे करते हैं, लेकिन लोग आमतौर पर इसे घटना या अपने प्रयासों के परिणाम के रूप में लेते हैं। मानव वास्तविक कारण नहीं समझ पाते हैं। मैं यहां यह बताना चाहता हूं कि सद्‌गुण अत्यधिक अनमोल है, और इसका किसी भी वस्तु में रूपांतरण किया जा सकता है। आधुनिक लोग इन वस्तुओं में विश्वास नहीं करते क्योंकि विज्ञान उन्हें नहीं समझ पाता और यही एक कारण है कि मानव के नैतिक गुणों का तेज़ी से पतन हो रहा है। लेकिन इस ब्रह्माण्ड में अत्यधिक बड़े और विशाल पदार्थ और उच्च प्राणी वास्तव में ब्रह्माण्ड में सभी वस्तुओं को संतुलित कर रहे हैं। जब आपको किसी वस्तु की हानि होती है जो नहीं होनी चाहिए, तो आपको उसका भुगतान या प्रतिफल भी अवश्य मिलेगा। न चाहते हुए भी व्यक्ति को हानि सहनी पड़ेगी, यही दूसरे आयाम में होता है। और मैंने पूर्व में जो बोला है उसका यह सरल उदाहरण है। वास्तव में पीड़ित को और भी लाभ प्राप्त होगा। इसलिए मैं कभी-कभी कहता हूं कि ज़रुरी नहीं है कि कठिनाई सहना कोई बुरी बात है। अतीत में, वृद्ध लोग, और विशेषतः सभी चीनी वृद्ध, कहते हैं, "अभी आप कुछ कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं और आने वाले समय में सब ठीक हो जाएगा।" और वास्तव में यही बात है। येशू कहते हैं कि यदि कोई आपके बायें गाल पर चांटा मारे, तो आपको दाहिना गाल भी आगे करना चाहिए। कुछ लोग यह नहीं समझ सकते हैं। वास्तव में, आज कल बहुत से कैथोलिक और ईसाई धर्म में विश्वास रखने वाले इसे नहीं समझ सकते हैं। इसका क्या कारण है? यीशु ने केवल सतही तौर पर बताया और इसके बारे में गहराई से नहीं समझाया। उनका यह मतलब था, जब कोई आपको एक तरफ मारता है, वह आपको सद्‌गुण देता है और आपके गलत कार्यों द्वारा किए कर्मों को कम करने में सहायता करता है। तब यदि मारने वाला अभी तक पूरी तरह से शांत नहीं हुआ है, अगर आप दूसरा गाल आगे करते हैं और उसे मारने देते हैं, तो क्या वह आपके और कर्म कम करने में सहायता नहीं कर रहा और आपको सद्‌गुण नहीं दे रहा है? जब आप सहन करते हैं, आपके शरीर से बुरे कर्म कम हो जाते हैं। सभी मानव कर्म उत्पन्न करते हैं। कुछ लोगों ने जानें ली हैं, दूसरों को नाराज किया है, दूसरों पर क्रोधित हुए हैं, किसी से घृणा की है, कुछ बुरा किया है और इसी तरह बुरे कर्म करते रहे—और इन सब का परिणाम है बुरा कर्म।यह काला तत्व है जो मानव शरीर को चारों ओर से घेरे रहता है। यह निर्धारित करता है कि कब कोई व्यक्ति पीड़ित और बीमार होगा या समस्याओं का सामना करेगा या व्यापार में असफल होगा या दूसरों की मार सहेगा या दूसरों द्वारा धिक्कारा जाएगा और कई, कई अन्य प्रकारों से पीड़ित होगा। और यह सब बुरे कर्मों का परिणाम है।

जब कोई आपको मारता है या आपका लाभ उठाता है, न केवल आप मारने वाले से सद्‌गुण पाते हैं, लेकिन साथ ही आपके, जब तक आप पीड़ा सहन करते हैं, बुरे कर्म सद्‌गुण में परिवर्तित होते हैं। तो एक क्रिया से दो लाभ प्राप्त हुए। साधारण व्यक्ति को दो तरह से लाभ हुए। लेकिन साधक के लिए यह परीक्षा उतीर्ण करना आवश्यक है। यदि वह यह पीड़ादायक कड़ी परीक्षा उतीर्ण कर लेता है, उसके नैतिक गुण बढ़ जाएंगे। और नैतिक गुण का बढ़ना मतलब उसके स्तर में बढ़ोत्तरी, तो उसका *गोंग* बढ़ेगा और उसका सद्‌गुण *गोंग* में परिवर्तित हो जाएगा। अब मैंने सारे सिद्धांत अच्छी तरह से समझा दिए हैं, लेकिन यह आप पर निर्भर करता है कि आप अपनी साधना में इसका उपयोग कितनी अच्छी तरह करते हैं।

वास्तव में, मैंने सिर्फ फा ही नहीं सिखाया है, लेकिन कुछ ऐसा भी सिखाया है जो आज तक किसी अन्य ने नहीं सिखाया है। मैंने सही मायनों में मानव जाति के लिए दिव्यलोक तक सीढ़ी उपलब्ध करवा दी है। आप जब तक इन महान सिद्धांतों का अनुसरण करते हुए साधना करते हैं, आप निश्चित ही फल पदवी प्राप्त करेंगे। मानव जाति ही नहीं, अतीत में किसी ने भी इन सिद्धांतों को नहीं सिखाया है। यदि आप विश्वास नहीं करते हैं, अतीत से वर्तमान तक, चीन या अन्य किसी देश में, आप सभी शास्त्रों को देख सकते हैं। चाहे वह ताओ, पवित्र बाइबिल, बौद्ध सूत्र—कोई भी इस तरह से दिव्य लोक के सभी रहस्य समझाते हुए सिद्धांत नहीं सिखाता।

शाक्यमुनि बुद्ध हैं और लोग मानते हैं कि बुद्ध शाक्यमुनि ने जो कुछ भी बताया है वही बुद्ध सिद्धांत है। फिर भी बुद्ध शक्यमुनि ने स्वयं कहा, "अपने पूरे जीवन में, मैंने कोई भी सिद्धांत नहीं बताया है।" लोग इस बात को नहीं समझे कि उन्होंने क्या कहा, और ज़ेन बुद्धधर्म मानने लगे कि कोई सिद्धांत नहीं है। [ज़ेन कहते हैं] यदि बुद्ध शाक्यमुनि ने कोई सिद्धांत नहीं सिखाये हैं, तब कोई कुछ भी नहीं कह सकता—चाहे कोई भी हो—कि यह बुद्ध सिद्धांत हैं, उनके बारे में बात करना भी प्रतिबंधित है, और कुछ भी बोला गया बुद्ध सिद्धांत नहीं है। यह एक पूरी तरह से भ्रमित समझ थी। तब बुद्ध शाक्यमुनि के कहने का अर्थ क्या था? बुद्ध शाक्यमुनि दिव्य हैं, और उन्होंने मानव समाज को बचाने के लिए जन्म लिया था। जब वे फलपदवी प्राप्त करने वाले थे तब वे बुद्ध बन जाते, और उनके शब्दों में स्वभाविक ही बुद्ध प्रकृति आ जाती। यद्यपि उन्होंने जो भी सिखाया वे बुद्ध सिद्धांत नहीं थे जो व्यवस्थित रूप से साधना का मार्गदर्शन करते। बुद्ध प्रकृति वाले शब्द उसी स्तर के कानून सिद्धांत हैं। लेकिन ये व्यवस्थित ब्रह्मांड के मौलिक सिद्धांत नहीं थे। इसके अलावा, बाद की पीढ़ियों द्वारा संकलित शास्त्र वास्तव में खंडित और अनिश्चित थे। यह वास्तव में ऐसा ही है। पच्चीस सौ वर्ष पूर्व शाक्यमुनि ने अपने शब्दों से उस समय के लोगों का मार्गदर्शन किया था और बुद्ध शाक्यमुनि ने देखा कि आज का मनुष्य कैसा होगा। इसलिए बुद्ध शाक्यमुनि ने तब कहा था कि उनके सिद्धांत धर्मविनाश काल के समय कार्य नहीं करेंगे। वास्तव में, आज के लोग नहीं समझ सकते कि बुद्ध शाक्यमुनि ने क्या कहा था।

पश्चिमी धर्मों में बाइबिल के लिए भी यही मान्यता है : लोग अब इसे वास्तव में समझ नहीं सकते हैं क्योंकि आधुनिक लोगों का मन बहुत ही जटिल हो गया है। लोग इसे किसी भी प्रकार से समझते हैं—वे सभी अपनी भावनाओं और स्वरुचि के आधार पर ऐसा कर रहे हैं—और इसलिए आज के लोग वास्तविक आंतरिक अर्थ नहीं समझ पा रहे हैं।

मैं सबको कहना चाहता हूं कि पुस्तक *ज़ुआन फालुन* वास्तव में अत्यंत अनमोल है। मनुष्यों के बीच कोई अन्य पुस्तक, इसकी तुलना नहीं कर सकती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि यह पुस्तक साधना के लिए है, एक बहुत ही गंभीर महान सिद्धांत लिए हुए जो लोगों का मोक्ष के लिए मार्गदर्शन कर सकती है। अभी कुछ लोगों ने कहा है कि जब आप *ज़ुआन फालुन* उठाते हैं और इसे पढ़ते हैं, तो इसमें प्रत्येक शब्द सुनहरे प्रकाश जैसे चमकते हैं। मुझे लगता है कि यदि आप निरंतर साधना करते रहें और फलपदवी तक परिश्रम कर सकें, तो कठिन प्रयास करने के दौरान यानी साधना करते हुए आप कई विभिन्न अनुभूतियों और दृश्यों को देख और अनुभव कर पाएंगे, जिन्हें साधारण लोग देख या अनुभव नही कर सकते। उस समय आप समझेंगे कि यह पुस्तक वास्तव में क्या है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं यहां इसके बारे में कैसे बात कर रहा हूं, फिर भी यह बात करनी जरूरी है। यदि मैं इसके बारे में और बात करता हूं, तो यह अविश्वसनीय प्रतीत होनी शुरू हो जाएगी। इसलिए मुझे लगता है कि यह अच्छा होगा यदि आप अपनी अंतर्दृष्टि पर पहुंचें और इसे स्वयं प्रमाणित करें। मैं केवल आपको बताना चाहता हूं कि यह फा अत्यंत अनमोल है।

मैने जब लोगों को फा के बारे में बताना शुरु किया, बहुत से उच्च स्तरीय और महान ज्ञान प्राप्त व्यक्तियों ने मुझे ऐसा करने से रोकने की कोशिश की और कहा, "मानव नैतिकता निम्न स्तर तक गिर चुकी है, और फिर भी आप इस अच्छाई को सार्वजनिक करना चाहते हैं। आपने मानवता की सर्वोत्तम अवधि के दौरान भी इसे सार्वजनिक नहीं किया और अब आप इसे सार्वजनिक करके सबको बता रहे हैं।" सभी देवता ऐसा ही सोच रहे थे।

लेकिन इस पर विचार करें। अभी-अभी मैंने कर्म और सद्गुण के बारे में बात की। कर्म और सद्गुण को मनुष्यों के पुनर्जन्म के रूप में साथ ले जाया जाता है। इंसान इन वस्तुओं को छोड़कर अपने जीवन से और कुछ भी नहीं ला सकता है, जो पुनर्जन्म के चक्र के माध्यम से उसका अनुसरण करता है। पुनर्जन्म की बात करें तो, मैं आपको बताना चाहता हूं कि धर्म, मनुष्यों के बारे में बात करते हैं कि वे मृत्यु के बाद अन्य आयामों में जाते हैं; विशेष रुप से पूर्व के धर्मों में वे पुनर्जन्म के छः मार्गों के बारे में बात करते हैं। मनुष्य वास्तव में पुनर्जन्म ले सकते हैं। यह सत्य है। साधक समुदाय में इसके बारे में कोई संदेह नहीं है, और सभी इस अवधारणा को स्पष्ट रूप से समझते हैं। पुनर्जन्म क्यों होता है? ऐसे लोग हैं जो कहते हैं, "जब लोगों की मृत्यु हो जाती है, तो सब समाप्त, है ना?" जिसकी मृत्यु होती है वो जन्म के बाद मानव भोजन खाने से बना शरीर है; यह मानव जीवन की मृत्यु नहीं है।

आधुनिक लोगों को समझाने के लिए, इसके बारे में ऐसे सोचें। मानव शरीर आणविक कणों से युक्त भौतिक सामग्री से बना है। यह सबको ज्ञात है। पृथ्वी, लकड़ी, और सीमेंट, लोहा, और इमारतों में लगे स्टील के चारों ओर की हवा सभी विभिन्न आणविक कणों से युक्त भौतिक सामग्री हैं। लेकिन अणु परमाणुओं से बने होते हैं, और परमाणु न्यूट्रॉन, इलेक्ट्रॉन, और नाभिक से बने होते हैं; और नाभिक से और आगे जाकर, क्वार्क नाभिक बनाते हैं, और नाभिक न्यूट्रिनों से बने होते हैं। यदि और आगे पता करने की कोशिश की जाए तो मनुष्य को पता नहीं चलेगा कि वहां और क्या है। जब मनुष्य की मृत्यु होती है, केवल सतह के भौतिक आयाम का शरीर जो परमाणु कणों से बना होता है वही नष्ट होता है; यह वैसा ही है जैसे कि व्यक्ति के कपड़े बदले गए हों। और परमाणुओं, नाभिक, और क्वार्क से भी सूक्ष्म सामग्री से बने शरीर के अंगों की मृत्यु नहीं होती है। वे भौतिक शरीर के साथ संभवतः नष्ट नहीं हो सकते। इसके बारे में सोचें : जब एक नाभिक विभाजित होता है, तो उसका परिणाम परमाणु विस्फोट होता है। जब किसी इंसान की मृत्यु होती है, तो क्या नाभिक को विभाजित करने जितना पर्याप्त बल मिल सकता है?

जब आज का विज्ञान नाभिक को विभाजित करता है, तो उसके लिए उच्च तापमान और दबाव की आवश्यकता होती है। तो क्या साधारण मानव शरीर में उस विखंडन के लिए पर्याप्त शक्तिशाली ऊर्जा हो सकती है? निश्चित रूप से एक श्मशान का तापमान नाभिक को विभाजित करने के लिए पर्याप्त नहीं है। अन्य शब्दों में, सूक्ष्म पदार्थों से निर्मित मानव शरीर को श्मशान भट्ठी की आग से नष्ट नहीं किया जा सकता है। यदि यह वास्तव में आपके शरीर में नाभिक को विभाजित कर सकता है, तो परमाणु विस्फोट होगा। जब मानव शरीर के भीतर परमाणु विस्फोट होगा, तो यह एक बड़े शहर के विनाश का कारण बन सकता है। यह एक परमाणु है, और इसकी ऊर्जा अत्यधिक है। तो ऐसा अभी तक क्यों नहीं हुआ? यह हमें बताता है कि मानव शरीर के भीतर परमाणु तत्व नष्ट नहीं होते हैं।

जैसा कि आप जानते हैं, जहां तक इंसानों का संबंध है, नाभिक और परमाणु अत्यधिक रेडियोधर्मी होते हैं। दूसरे शब्दों में, वे एक तरह की ऊर्जा हैं। वास्तव में, हालांकि, पदार्थ जो और भी अधिक सूक्ष्मदर्शी हैं, जैसे क्वार्क, नाभिक की तुलना में और भी अधिक रेडियोधर्मी होते हैं, और कोई भी नहीं जानता कि क्वार्क की तुलना में न्यूट्रीनो का विकिरण कितना अधिक होता है। जितने छोटे कण, उतनी अधिक ऊर्जा। मैं आपसे कह सकता हूं कि आप जिस *गोंग* की साधना करते हैं उसमें और अधिक शक्तिशाली परमाणु, न्यूट्रॉन और यहां तक कि और अधिक सूक्ष्म पदार्थ भी शामिल हैं। आप जो *गोंग* विकसित करते हैं वो बीमारियों को क्यों ठीक करता है? यह मानव शरीर को क्यों परिवर्तित कर सकता है? साधक इतने चमत्कार क्यों कर सकते हैं? ऐसा इसलिए है क्योंकि *गोंग* और दिव्य शक्तियां इन उच्च ऊर्जा पदार्थों से बनी होती हैं। इसके अलावा, यह पदार्थ, जो उच्च सिद्धांतों की साधना के माध्यम से विकसित होते हैं, उच्च सत्ता और करुणावान होते हैं। उन्हें साधक की मुख्य चेतना द्वारा नियंत्रित किया जाता है और यह उनके ही मन द्वारा निर्देशित होता है। वे दुर्भावनापूर्ण, विनाशकारी प्रभावों के विपरीत हैं जो वैज्ञानिक साधनों का उपयोग करके किए गए परमाणु विखंडन के परिणामस्वरूप होते हैं। वैज्ञानिक साधनों का उपयोग कर परमाणु बम के विस्फोट से जारी ऊर्जा दुर्भावनापूर्ण है। यह एक विशिष्ट दिशा में नहीं जाती है, यह मनुष्यों और अन्य जीवों के लिए हानिकारक है और यह मानवीय पर्यावरण के लिए भी विनाशकारी है। इसके विपरीत, साधकों से उत्सर्जित ऊर्जा, उच्च सत्तावान है और इसका सकारात्मक प्रभाव हो सकता है। चीनी एकेडमी ऑफ साइंसेज के शोधकर्ताओं ने मूल्यांकन करने के लिए एक बार मेरा परीक्षण किया, और जब मैं फा को पढ़ रहा था तो उन्हें उत्सर्जित ऊर्जा पदार्थ का पता लगा। द इंस्टीट्यूट ऑफ हाई एनर्जी फिजिक्स ऑफ द चाइनीज एकेडमी ऑफ साइंसेज, उच्च ऊर्जा भौतिकी अनुसंधान में पारंगत है। उन्होंने सम्मेलन कक्ष के चार कोनों के साथ-साथ कमरे के बीच में और विभिन्न स्थानों पर उपकरणों को रखा। जहां मैं फा को पढ़ रहा था उसके पीछे एक टेबल पर भी उपकरण रखा गया था। परीक्षण के दौरान, उन्होंने पाया कि मुझसे उत्सर्जित ऊर्जा में शक्तिशाली न्यूट्रॉन और परमाणु शामिल थे। बेशक, वे इतना ही परीक्षण कर सकते थे, क्योंकि उनके पास अधिक सूक्ष्म पदार्थों को जांचने के लिए उपकरण नहीं थे। उन्हें यह जानकर आश्चर्य हुआ कि मुझसे उत्सर्जित ऊर्जा क्षेत्र समान रूप से वितरित हो रहे थे और ऊर्जा को निर्देशित किया जा सकता था। आज के वैज्ञानिक शोध में, यह ज्ञात है कि जब परमाणु पदार्थ उत्सर्जित होते हैं, तो इनकी कोई विशिष्ट दिशा नहीं होती है और कोई भी नहीं जानता कि यह कहां जाएंगे। इसके अलावा, यह नज़दीक [विस्फोट के स्थान पर] शक्तिशाली और जैसे-जैसे आप दूर होते हैं कमज़ोर होता जाता है। विकिरण अपने क्षेत्र में सबको हानि पहुंचाता है। स्पष्ट है, आधुनिक विज्ञान परिपूर्ण नहीं है और इसमें अंधविश्वास करने से मानवता को अत्यधिक क्षति होगी।

मैंने अभी समझाया है कि मानव जीवन भौतिक शरीर के साथ नहीं मरता है, जब इस आयाम में शरीर मृत हो जाता है तब मनुष्य की आत्मा मुक्त हो जाती है । यह मूल रूप से एक अलग आयाम में थी और जन्म के समय इस आयाम में केवल मानव शरीर के साथ विलय हो गयी थी। जब इस आयाम में शरीर मृत हो जाता है, आत्मा मुक्त हो जाती है। इस प्रकार, धर्मों ने पुनर्जन्म के चक्र के बारे में जो बात की है, वह सत्य है। पुनर्जन्म के चक्र में एक जीवन पुनः जन्म ले सकता है। एक व्यक्ति एक इंसान के रूप में बार-बार पुनर्जन्म ले सकता है, या एक वस्तु के रूप में पुनर्जन्म, एक जानवर के रूप में, या यहां तक कि एक उच्च प्राणी के रूप में, या किसी और के रूप में पुनर्जन्म ले सकता है।

बौद्ध धर्म पांच दिव्य शक्तियों को खोलने के बारे में बात करता है, जिनमें दिव्य दृष्टि, विवेक दृष्टि, फा दृष्टि, और बुद्ध दृष्टि हैं। जब आपकी विवेक दृष्टि खुल जाती है, तो आपके समक्ष की दुनिया ऐसी नहीं होगी [जैसी यहां है]। तब यह कैसी होगी? आप पाएंगे कि आपकी दृष्टि, आपके स्तर अनुसार, किसी भी वस्तु के माध्यम से देख पाएगी और यहां तक कि अधिक सूक्ष्म पदार्थों को भी देख पाएगी । और आप पाएंगे कि सभी वस्तुएं सजीव हैं। जब इन वस्तुओं को ज्ञात होगा कि आप उन्हें देख सकते हैं, तो वे भाषा और विचारों का उपयोग कर आप से बात करेंगी। कुछ साधारण लोग सोचेंगे कि यह बेतुका और सच से परे है। निश्चित ही, यह साधना का विषय है, और इसे फालुन दाफा के शिष्यों को सिखाया जा रहा है। आप सभी साधक हैं, और मैं साधारण लोगों से बात नहीं कर रहा हूं; मैं इन वस्तुओं को ऐसे ही साधारण लोगों को नहीं बता सकता। बहुत से साधारण लोग इन पर विश्वास नहीं करेंगे।

तो, तब तक आपने पाया होगा कि कोई भी वस्तु अपने पूर्व जीवन में मनुष्य भी हो सकती थी; उस मनुष्य की मृत्यु हो गई और वस्तु के रूप में उसका पुनर्जन्म हुआ। इस बात पर मैं कुछ कहना चाहता हूँ। एक इंसान पुनर्जन्म के समय बुरे कर्म के साथ-साथ सद्गुण भी साथ लेकर आता है। क्योंकि आज के लोगों की नैतिकता में गिरावट आयी है, लोगों के पास कम से कम सद्गुण और बुरे कर्मों की बड़ी मात्रा होती है। एक दूसरे के रूपों में पुनर्जन्मों के कारण, जब आप फिर से देखेंगे, तो आप पाएंगे कि न केवल मनुष्यों के बल्कि वस्तुओं के भी काले कर्म हैं। एक जीवन इस बुरे कर्म को साथ ले जाएगा क्योंकि यह पुनर्जन्म के चक्र में पुनः जन्म लेता है, इसलिए किसी भी वस्तु में बुरे कर्म हो सकते हैं, जो किसी को अस्वस्थ कर सकते हैं। मानव आयाम में बुरे कर्म सूक्ष्म वायरस के रूप में प्रकट होते हैं। आजकल बुरे कर्म इतने प्रचुर मात्रा में है कि कोई भी वस्तु इन्हें धारण कर सकती है। जैसा कि आप जानते हैं, अतीत में जब खेतों में काम करते समय चीनी किसान के हाथ कट जाते थे, तो वे कुछ मिट्टी लेकर घाव पर लगा लेते थे, और उस पर ध्यान देना छोड़ देते थे और जल्द ही घाव ठीक हो जाता था। लेकिन आज आप [हाथ कटने पर] मिट्टी स्पर्श भी नहीं कर सकते। यहां तक कि थोड़े से स्पर्श से ही एक साधारण व्यक्ति संक्रमित हो सकता है, घाव गंभीर बन सकता है, और वह टेटनस से मर भी सकता है। ऐसा क्यों है? इससे पता चलता है कि मिट्टी आजकल बुरे कर्म से भरी हुई है। इसलिए, जब कोई पृथ्वी को उच्च आयाम से देखता है, बुरे कर्म हर जगह देखे जाते हैं—एक के बाद एक लहरें। क्योंकि मानव दृष्टि इसे नहीं देख सकती है लोग सोचते हैं कि सब ठीक है।

सब कोई फ्लू के बारे में जानता है, है ना? आमतौर पर, फ्लू तब फैलने लगता है जब उच्च घनत्व का बुरा कर्म समूह किसी क्षेत्र को घेर लेता है। कैंसर, एड्स, और इनके जैसी घातक कर्मों से संबंधित बीमारियां हैं जो विशिष्ट लक्ष्य से उत्पन्न होती हैं—उदाहरण के लिए, एड्स अनैतिक संबंधों और समलैंगिक व्यवहार को लक्षित करता है—और वे और भी उच्च घनत्व के बुरे कर्म हैं। आम तौर पर माना जाता है,

अधिक बुरे कर्म वाले क्षेत्रों में लोग ज्यादा बीमार हो सकते हैं। जिस क्षेत्र में उच्च घनत्व के बुरे कर्म होते हैं वहां महामारी फैलती है और यह क्षेत्र मनुष्यों द्वारा बड़ी मात्रा में बुरे कर्मों के कारण क्लेशित होता है।

मैं इस विषय पर क्यों बात कर रहा हूँ? मैंने देखा है कि मानव की नैतिकता में भारी गिरावट आई है और यदि यह जारी रहता है, तो मनुष्यों को और भी अधिक संकट का सामना करना पड़ेगा। यदि दिव्य लोक के प्राणी मनुष्यों को मनुष्यों के रूप में नहीं मानेंगे, तो असली संकट निश्चित है। मनुष्य मनुष्यों की भांति बर्ताव करते हैं—मानव रूप होने से जरूरी नहीं है कि आप मनुष्य हैं। आखिरकार, रुप में बंदर भी मनुष्यों के समान ही होते हैं। यदि मनुष्यों के पास मानवीय नैतिक गुण और मापदंड नहीं होंगे, तो दिव्य प्राणी उन्हें मानव नहीं मानेंगे, और उस स्थिति में मनुष्य गंभीर संकट की स्थिति में होंगे। ऐसा इसलिए है क्योंकि मनुष्यों को दिव्य प्राणियों ने बनाया है और उनकी देख-रेख भी वे ही करते हैं। मानव जाति की प्रामाणिक संस्कृतियां तब प्रकट हुईं जब दिव्य प्राणियों ने ऐसा चाहा। जब मनुष्य मानवीय नैतिक गुणों से परे चले जाते हैं, दिव्य प्राणी उनका संहार कर देते हैं। मैंने पाया है कि मनुष्य जब वर्तमान की वस्तुओं के साथ बहने लगते हैं, तो अनजाने में वे सबकुछ खराब कर लेते हैं, खुद को और भी खराब कर लिया है, और समाज को भ्रष्ट करने का कारण भी बन गये हैं। और सबसे विशेष रूप से, उन्होंने मानवीय नैतिकता को अशुद्ध कर दिया है। सबसे स्पष्ट अभिव्यक्ति अब यह है कि कैसे संस्कृति भ्रष्ट हो गई है, जिससे मानव प्रकृति दुष्ट हो गयी है। परिणाम स्वरूप, संगठित अपराध, नशीली दवाओं के दुरुपयोग, नशीली दवाओं की तस्करी, अनैतिक संबंध और समलैंगिकता समाज में उभर कर सामने आया है। लोग झूठ के सागर और अनगिनत दुराचार में गोते लगा रहे हैं। यहां तक कि आपराधिक सरगनों की महिमा गायी जा रही है। इस तरह की कई, कई वस्तुएं हैं। इसके बारे में सोचें, सब लोग : क्या यह सामान्य है? मानव अवधारणाएं कैसे बदल गई हैं! और यह इन मुद्दों तक ही सीमित नहीं है। मजबूत राक्षसी प्रकृति अब समाज के सभी अलग-अलग वर्गों के लोगों के मन में घर कर गयी है। मैं इस संकट से मनुष्यों को उबारने के उद्देश्य से इस फा को सिखा रहा हूं जिससे उन्हें साधाना के माध्यम से बचाया जा सके। यदि आप वास्तव में अंत तक साधना कर सकते हैं, तो मैं वास्तव में आपके लिए फल पदवी प्राप्त करना संभव कर सकता हूं।

अभी मैंने समाज में हो रहीं कुछ घटनाओं का उल्लेख किया है। वर्तमान में, ऐसा नहीं है कि मैं समाज के लिए कुछ करना चाहता हूं; मुझे यह विचार नहीं आया है। हालांकि, यह फा लोगों को बचाने में सक्षम है, यह लोगों को अच्छा बनाता है, और यह वास्तव में आपके नैतिक गुण और मूल प्रकृति को बदल सकता है। इस प्रकार, यद्यपि ऐसे कई लोग हैं जो साधना नहीं करते हैं, जब लोग इस फा की शिक्षा को जानेंगे तब वे अच्छा बनने की कोशिश करेंगे। जब लोगों को अनुभव होगा कि बुरा होने से उन्हें क्या हानि होगी (तालियां), वे अच्छे लोग बनने की कोशिश करेंगे। इसका मतलब है कि जब एक सच्चा फा सार्वजनिक किया जाता है तो यह निश्चित रूप से समाज को लाभान्वित करेगा।

वर्षों से फा सिखाने के दौरान, मैं निम्नलिखित सिद्धांत पर दृढ़ रहा हूं : मैं इसे लोगों और समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना से कर रहा हूं। मैंने कभी भी वस्तुओं को बेकार में नहीं किया है। जैसा कि आप जानते हैं, मुझे फा सिखाने के लिए बहुत दूर से सिंगापुर आना पड़ा, लेकिन मुझे आपसे कोई पैसा नहीं चाहिए। मैं शीघ्र चला जाऊंगा और मैं केवल आप सब के साथ यह फा छोड़ जाऊंगा। कई छात्रों ने मुझसे पूछा है, "गुरु जी, इस ब्रह्मांड में यह सिद्धांत कि 'कोई हानि नहीं तो लाभ नहीं; लाभ के लिए, कुछ खोना पड़ता है; और खोने से, आपको लाभ होगा।' लेकिन फिर आप हमें बिना किसी इच्छा के बचा रहे हैं, हमें इतनी अच्छी वस्तुएं दे रहे हैं, हमें फा सिखा रहे हैं, हमारी देखभाल करते हैं, जब हम साधना

करते हैं, बुरे कर्मों को दूर करने में मदद करते हैं, कई वस्तुओं को हमारे शरीर में स्थापित करते हैं, और अलग-अलग स्तरों पर हमारे लिए कई समस्याओं का हल करते हैं क्योंकि व्यक्ति तो साधना करता है और *गोंग* गुरुजी द्वारा नियंत्रित किया जाता है'—तब आप क्या चाहते हैं? "मैंने कहा कि मुझे कुछ भी नहीं चाहिए। मैं आपसे अलग हूं, क्योंकि मैं विशेष रूप से यही करने आया हूं। यदि आप पूछेंगे कि मैं क्या चाहता हूं, तो मैं केवल उस मन को देखना चाहता हूं—मन जो साधना चाहे और मन जो भलाई करे। (*तालियां*)

मैंने बहुत अधिक समय ले लिया है, है ना? (गुरुजी हंसते हैं) यदि अभी भी समय है तो मैं और बोल सकता हूं। बुद्धत्व की साधना करने के कई-कई मार्ग हैं। आप सभी जानते हैं कि आप जिस फालुन गोंग का अभ्यास कर रहे हैं, वह बुद्ध सिद्धांतों पर आधारित है—सिर्फ इतना है कि मैं उस भाषा का उपयोग नहीं कर रहा हूं जिसे अतीत में शाक्यमुनि ने सिखाने के लिए उपयोग किया था और मैं संभवतः ऐसा नहीं कर सका, क्योंकि आज की भाषा अलग है। इसलिए मैं फा और हमारे अभ्यास को सिखाने के लिए केवल वर्तमान मानव भाषा का उपयोग कर सकता हूं। आज मैं जिस फा को सिखा रहा हूं वह शाक्यमुनि द्वारा सिखाए गए बुद्ध सिद्धांतों से अलग है। ऐसा क्यों है? क्योंकि साधना का मार्ग जो मैंने साधकों को दिया है और साधना द्वारा जो केंद्रित वस्तुएं हैं वे सभी अतीत के समान नहीं हैं। साधकों के नैतिक गुण और स्तरों के लिए उच्च आवश्यकताएं हैं और फल पदवी भी उच्च है। क्योंकि जो मैं सिखा रहा हूं वह ब्रह्मांड का सबसे मूल सिद्धांत है। बुद्ध शाक्यमुनि जिन शब्दों का उस समय उपयोग करते थे, उनमें बुद्ध-प्रकृति होती थी और कहा जा सकता है कि वे उस स्तर पर बुद्ध सिद्धांत हैं। हालांकि वे मूलभूत सिद्धांत या उच्चतम सत्य नहीं हैं जिन्होंने ब्रह्मांड को बनाया है। ब्रह्मांड का सर्वोच्च सत्य *ज़न शान रेन* है। सभी पदार्थों में, जैसे कि स्टील, लोहा, लकड़ी, पत्थर, वायु, पानी और मिट्टी, और इसमें सभी सूक्ष्म पदार्थ शामिल हैं—उनके मूल तत्वों से लेकर सतह के पदार्थों तक—सभी में *ज़न शान रेन* की प्रकृति है। *ज़न शान रेन* पूरे ब्रह्मांड में सभी प्राणियों और सभी पदार्थों के माध्यम से प्रवाहित होता है और यह ब्रह्मांड की सबसे मूल प्रकृति है। मैंने वर्तमान समय की सबसे सरल भाषा का उपयोग करके सत्य को स्पष्ट रूप से समझाया है। दाफा एक पिरामिड की तरह है और यह शीर्ष पर सरल और नीचे की तरफ अधिक विशाल और जटिल हो जाता है। इस प्रकार मानव और ब्रह्मांड के निचले स्तर जटिल हैं। उच्चतम स्थान पर—बुद्ध फा का शीर्ष—यह *ज़न शान रेन* है, सभी तीनों शब्द। ब्रह्मांड में सभी उच्चतम पदार्थ और तत्व *ज़न शान रेन* से बने हैं—ब्रह्मांड की आत्मा, ब्रह्मांड की प्रकृति, बुद्ध फा के वास्तविक सत्व आदि। अतीत में यह सर्वोच्च रहस्य था। यहां तक कि बहुत से उच्च प्राणियों को भी यह नहीं पता था। यद्यपि मैंने, जैसा कि आपने देखा, अपनी पुस्तक में कई दिव्य रहस्यों को उजागर किया है, मैंने उन्हें आकस्मिक रूप से नहीं बताया है। यदि ली होंगज़ी ने दिव्य रहस्यों को आकस्मिक रूप से उजागर करके, बिना उद्देश्य से बात करते हुए, सभी को खुश किया होता, अगर यह ऐसा था या आपने इसे केवल कुछ जानकारी के रूप में ही सोचा होता, तब मैं यहां दिव्य सिद्धांतों को क्षति पहुंचा रहा होता। अगर ऐसा होता, तो ली होंगज़ी आज यहां खड़े नहीं होते और उन्हें दंडित किया गया होता और कोई भी नहीं जानता कि वे कहां होते। फा को सिखाने के दौरान मैं सभी के लिए उत्तरदायी हूं ताकि आप उच्च स्तरों की ओर बढ़ सकें। ऐसा करके, मैं निरंतर लोगों के लिए उत्तरदायी रहा हूं, और वास्तव में ऐसे बहुत से हैं जो अच्छी तरह से साधना कर चुके हैं। तो यह दर्शाता है कि मैं जो कर रहा हूं वह बिना किसी उद्देश्य के या कुछ ऐसे ही नहीं कर रहा हूं। वास्तव में, इस संबंध को इतिहास में बहुत पहले व्यवस्थित किया गया था और पूर्ण तैयारी करने में बहुत समय लगा था। आज आप यहां बैठकर फा को सुन पा रहे हैं और यह आपके कर्म संबंधों के कारण है और आपका समय भी आ गया है। भले ही आपने

मानव जगत में कितनी बार पुनर्जन्म लिया है, आज आपका समय आ गया है और यही कारण है कि आप फा प्राप्त कर पा रहे हैं।

यद्यपि बुद्ध शाक्यमुनि यह नहीं देख पाये कि यह ब्रह्मांड वास्तव में कितना बड़ा है, न ही यह कि कितना सूक्ष्म हो सकता है लेकिन जो उन्होंने देखा वह भी वास्तव में काफी सूक्ष्म था। उन्होंने देखा कि रेत के एक कण में तीन हजार विश्व हैं। "तीन हजार विश्वों" का क्या अर्थ है? उदाहरण के लिए, हमारी आकाशगंगा में, बुद्ध ने देखा कि स्वर्ग और पृथ्वी के साथ मनुष्यों की तीन हजार प्रणालियां हैं, और जीवन प्रणालियों के अंदर जहां दिव्य और बुद्ध मौजूद हैं, वहां ऐसे समाज हैं जैसे मनुष्यों के। प्रत्येक विश्व में अनगिनत प्राणी होते हैं, जैसे यहां की प्रणाली जिसमें दैवीय प्राणी और सांसारिक मनुष्य होते हैं। बुद्ध ने कहा कि रेत के प्रत्येक कण में भी तीन हज़ार विश्व हैं। इसके बारे में सोचें, तो: शाक्यमुनि ने जिसका वर्णन किया है वह कितना सूक्ष्म और भव्य है। क्या यह भव्यता विश्वास योग्य है। मैं आपको समझाता हूं। पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है और वैज्ञानिकों ने अब पाया है कि इलेक्ट्रॉन उसी तरह से नाभिक के चारों ओर घूमते हैं। सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करते हुए पृथ्वी से यह अलग कैसे हैं ? यह ऐसा ही है। जब एक इलेक्ट्रॉन को हमारी पृथ्वी के आकार जितना बड़ा किया जाता है तो आप देखेंगे कि इस पर जीवन है, कितने लोग हैं और वे कैसे दिखते हैं। यहां तक कि अधिक सूक्ष्म स्तर पर और भी सूक्ष्म जीव हैं। शाक्यमुनि ने कहा था कि रेत के एक कण में तीन हजार विश्व होते हैं। यदि हम शाक्यमुनि के सिखाये सिद्धांत अनुसार पता लगायें—अर्थात्, रेत के एक कण में तीन हजार विश्व हैं— तो क्या यह सच नहीं है कि रेत के कण में तीन हजार विश्वों में भी मानव जगत की तरह नदियां, नहरें, सागर, और महासागर हैं? तो नदियों, नहरों, सागरों और महासागरों में भी रेत है? और उनके रेत के कणों में भी तीन हजार विश्व हैं? यदि इस तर्क के आधार पर देखा जाये, तो क्या यह सच नहीं है कि रेत के अंदर की रेत में भी तीन हजार विश्व हैं? मैंने पाया है कि वे इतने असंख्य हैं कि उनकी गिनती का कोई मार्ग नहीं है और महान स्तर पर महान ज्ञान प्राप्त प्राणियों का मानना है कि प्राणी और पदार्थ इतने सूक्ष्म हो जाते हैं कि इसका कोई अंत नहीं होता। तो पदार्थ कितना सूक्ष्म हो सकता है? यहां तक कि बहुत उच्च स्तर पर दिव्य और बुद्ध भी इसकी उत्पत्ति नहीं देख सकते—स्रोत जो पदार्थ बनाते हैं। इस संबंध में, मानव विज्ञान प्राथमिक विद्यालय स्तर तक भी नहीं पहुंच पाया है! यह हमेशा अंधेरे में रहेगा और बुद्ध फा की विशालता के समान इसका उल्लेख नहीं किया जा सकता। आधुनिक विज्ञान केवल न्यूट्रीनो और क्वार्क जैसे सूक्ष्म कणों को ही समझ सकता है। आधुनिक विज्ञान ने मात्र न्यूट्रीनो और क्वार्क का पता लगाया है। वास्तव में; उनके पास उन्हें देखने का कोई मार्ग नहीं है, उनके पास पर्याप्त शक्तिशाली सूक्ष्मदर्शी नहीं है। यही कारण है कि कुछ समय पहले मैंने कहा था कि बुद्ध शाक्यमुनि ने नहीं देखा कि पदार्थ का मूल स्रोत क्या है, न ही ब्रह्मांड में सबसे बड़े पदार्थ क्या हैं। इसलिए उन्होंने कहा: "यह इतना वृहत्तम है कि कोई बाह्य नहीं है और इतना सूक्ष्म है कि कोई आंतरिक नहीं है।" अर्थात, यह ब्रह्मांड इतना विशाल है कि इसकी कोई सीमा नहीं है, और इतना छोटा है कि इसका कोई अंत नहीं है कि यह कितना सूक्ष्म हो सकता है। एक तथागत बुद्ध दिव्य होते हैं। चाहे वे इतनी दूर तक देख सकते हैं, फिर भी वे इसका अंत नहीं देख सकते।

इसका मतलब है कि ब्रह्मांड व्यापक और विशाल है, और इसके घटक विशाल और जटिल हैं। पदार्थ की उत्पत्ति के विषय में कहा जाये तो, तब, इसे वास्तव में "पदार्थ" नहीं कहा जा सकता है। यह फा शक्ति या *ज़न शान रेन* की प्रकृति है जो मूल तत्वों को मूल पदार्थों में बनाती है। और वे, बाद में, *ज़न शान रेन* के माध्यम से परत-दर-परत विभिन्न स्तरों के पदार्थों को बनाते हैं, जब तक कि एक पदार्थ की

बड़ी परत का गठन नहीं हो जाता, जो न्यूट्रीनो, क्वार्क, नाभिक, परमाणु, अणु तक पहुंचते हुए और सभी सतह के पदार्थों तक भी जिसे मनुष्य अब समझता है। और वे सभी *ज़न शान रेन* की प्रकृति के माध्यम से विलय होते हैं। इसलिये इस ब्रह्मांड का अंतिम सत्य *ज़न शान रेन* है और यही बुद्ध फा का सार है।

तीन शब्दों को कहना आसान है, लेकिन यदि इस फा का विस्तार किया जाये, तो यह वास्तव में विशाल है। *ज़न* में विभिन्न स्तरों पर कई सिद्धांत हैं, वैसे ही *शान* और *रेन* में भी विभिन्न स्तरों पर कई सिद्धांत शामिल हैं। सामान्य मानव स्तर पर, *ज़न* में उदारता, नीतिपरायणता, शिष्टाचार, ज्ञान, विश्वसनीयता, और कई अन्य मानवीय सिद्धांत शामिल हैं; मानव आयाम के *शान* में भावनाएं (चिंग) होती हैं और ये सभी फा सिद्धांत, ब्रह्मांड के वास्तविक, मूल महान सिद्धांतों *ज़न शान रेन* के लिये ही किये गये हैं।

भावनाओं की बात करें तो, यदि मनुष्य में भावनाएं नहीं होतीं, तो मनुष्य दो अवस्थाओं में से एक में होते : या तो परग्रही वासियों की तरह उदासीन या दिव्यों की तरह करुणामय। मनुष्य इसलिए मनुष्य है क्योंकि उनमें भावनाएं हैं। लोग खुश या दुखी भावनाओं के कारण होते हैं। एक व्यक्ति कुछ पसंद या नापसंद करता है; आप किसी से परेशान हैं या किसी और के साथ मित्रतापूर्ण हैं; आप कुछ विशेष करना पसंद करते हैं, या आप कुछ पैसा कमाना चाहते हैं; या आप अच्छी सरकारी नौकरी प्राप्त करना चाहते हैं—उन सभी वस्तुओं के प्रति आपकी प्रमुखता जो आप करना चाहते हैं ... आप ऐसा करना चाहते हैं, या वैसा ... मानव विश्व में सबकुछ भावनाओं के अंतर्गत है। और मनुष्य दृढ़ता से वस्तुओं को पाना चाहता है क्योंकि वह भावनाओं से प्रेरित होता है। मानव समाज के इस स्तर पर, फा ने मनुष्यों और मानव आयाम को बनाया, और इस मानव अवस्था की स्थापना की।

साधना अनिवार्य रूप से मानव अवस्था को छोड़ने, भावनाओं से प्रेरित होने वाले मोहभावों से छुटकारा पाने का विषय है। साधना करते हुए उन्हें क्रमशः हल्के ढंग से लेना और धीरे-धीरे अपने स्तर को बढ़ाना। कुछ लोग सोचते हैं कि जीवन भावनाओं के बिना नीरस हो जाएगा—न फिल्में, न आकर्षक साथी खोजने में कोई रुची, और न स्वादिष्ट खाद्य पदार्थों की इच्छा—यह बहुत नीरस हो जाएगा। मैं आपको बताना चाहता हूं, हालांकि, यह ऐसे ही लगेगा जब आप एक सामान्य व्यक्ति के दृष्टिकोण से देखेंगे। यदि आप उच्च स्तर पर पहुंचते हैं, आप उन उच्च स्तरों की सुंदर अवस्था को अनुभव कर पाएंगे और आप पाएंगे कि इस मानव दुनिया में सब कुछ बेहतर है। इतना कि कोई भी शब्द वहां की सुंदरता का वर्णन करने में सक्षम नहीं होगा। लेकिन यदि आप उस सुंदरता का अनुभव करना चाहते हैं, तो अपने-आप को मानवीय हितों से प्रेरित भावनाओं से छुड़ाना होगा, साधारण मोहभाव जो मानवीय हैं। केवल जब आप सामान्य मानव मोहभावों का त्याग कर देते हैं तभी आपको बेहतर वस्तुएं मिलेंगी।

आप सभी मेरे शिष्य हैं, इसलिए जब आप साधना करते हैं तो मैं आपके लिए बहुत उच्च मानक निर्धारित कर सकता हूं। जैसे-जैसे आप साधना करेंगे, आप शायद, कुछ समय तक, कुछ मानवीय मोहभावों को छोड़ने में सक्षम न हों, लेकिन चिंता न करें। यदि मैं आज फा सिखाना समाप्त करता हूं और आप में से प्रत्येक उसे पूरा करने में सक्षम होते हैं, आप उसी समय बुद्ध बन जाएंगे। (तालियां) लेकिन शुरुआत करने वाले लोगों के लिए ऐसा करना मुश्किल है। इंसानों के लिए एक साथ सभी मानवीय वस्तुओं को छोड़ना असंभव है। यहां पर बैठे सभी लोगों को फा सुनना अच्छा लग रहा है और सभी मुझे सुनना चाहते हैं, क्योंकि यह एक सच्ची साधना की शक्तिशाली शक्ति का प्रभाव है। सच्ची साधना की ऊर्जा करुणामय, सामंजस्यपूर्ण और सभी नकारात्मक तत्वों को हटाने और परे रखने में सक्षम है। यही कारण है कि सभी को यहां बैठना अच्छा लग रहा है। आप भी ऐसा करने में सक्षम होंगे जब आप साधना में एक

निश्चित स्तर प्राप्त कर लेंगे। आप शुरुआत में ऐसा करने में सक्षम नहीं होंगे क्योंकि अभी भी बहुत से मोहभाव हैं जिन्हें आप त्याग नहीं पाये हैं और आपके नैतिक विचार अभी तक दृढ़ नहीं हैं। लोगों के बीच सभी भावनाएं और आत्महित से उत्पन्न संघर्ष जो मानव समाज में आपके साथ होंगे, वे आपको कुछ स्तर तक परेशान करेंगे। और आपका शरीर कष्ट सहेगा या मौसम के कारण बुरे कर्म निकल रहे होंगे। आप कठिनाई के बीच खुद को कैसे संभालेंगे? यदि आप स्वयं को बेहतर रुप से संभाल पाते हैं और संघर्षों को सामान्य लोगों की तरह नहीं लेते, तब आप अपने नैतिक विचारों को अच्छा और मजबूत कर रहे होते हैं। जब कोई आप पर प्रहार करता है, यदि आप स्मरण रखते हैं, "मैं एक अभ्यासी हूं, आप एक साधारण व्यक्ति हैं। इसलिए मैं ऐसा नहीं करूँगा," तो आप सुधार कर रहे हैं। यदि आप वास्तव में प्रहार का उत्तर नहीं देते और अपशब्द नहीं बोलते जब कोई आपको अपशब्द बोल रहा हो, यदि आगे बढ़ने के लिए कोई आपसे लड़ता है और आप उस पर ध्यान नहीं देते, हालांकि, यह केवल एक विचार का अंतर है, आप पहले ही साधारण लोगों से हजार मील आगे निकल आये हैं। इसलिए, यदि आप इस स्तर पर पहुंचना चाहते हैं, तब आपको साधारण लोगों के बीच रहते हुए साधना में निरंतर प्रगति करनी होगी। आप कह सकते हैं, "मैं इसे तुरंत प्राप्त करना चाहता हूं," लेकिन यह वास्तव में कठिन है। आपको वास्तविक अनुभवों और परीक्षणों के बीच मोहभावों का त्याग करना है, और केवल तभी आप साधना में जो प्राप्त करेंगे वह ठोस होगा।

मानवीय विज्ञान कभी भी बुद्ध स्तर तक नहीं पहुंच पायेगा। क्यों? क्योंकि मानव ज्ञान को उच्च प्राणियों द्वारा सीमित और नियंत्रित किया जाता है। क्यों? क्योंकि मनुष्य दिव्यों द्वारा बनाए गए थे और मानव सत्य विपरीत हो गये हैं [उनके ऊपर की तुलना में]। बुद्ध क्या है? वे अपने स्तर पर सभी प्राणियों के उत्तरदायी हैं, सभी प्राणियों के संरक्षक और ब्रह्मांड की सत्यता के रक्षक हैं। इसके बारे में सोचें, मनुष्य के पास सभी प्रकार के मोहभाव हैं, जिनमें प्रसिद्धि का मोहभाव, धन, भावनाओं और इच्छाएं, और ईर्ष्या भी है, इसलिए यदि उन्हें बुद्ध के आयाम में प्रवेश करने की अनुमति दी गई तो वे बुद्ध के साथ मतभेद शुरू कर सकते हैं। इसकी अनुमति कैसे दी जा सकती है? इसलिए, आपको मनुष्यों के बीच रहते हुए इन मानवीय मोहभावों को छोड़ना होगा, इससे पहले कि आप उस आयाम और स्तर तक पहुंचे। आज ऐसे भिक्षु हैं जो साधारण लोगों से कहते हैं, "आप बुद्ध हैं! आपने बुद्ध के नाम का जाप किया है, इसलिए आप बुद्ध बन जाएंगे जब आपका वर्तमान जीवन समाप्त हो जाएगा—भले ही आप न चाहें।" यह बुद्ध की निंदा करने और फा की निंदा करने जैसा है। भिक्षु भी इंसान है, और यहां तक कि जो वास्तव में साधना करने में सफल हो जाते हैं, वे भी केवल एक साधक ही होते हैं। यदि, मनुष्य अच्छी तरह साधना नहीं करता, तो वह साधारण व्यक्ति की तरह कुछ भी नहीं है। यदि साधना के दौरान वह गलती करता है, तो वह जो पाप करता है वह साधारण व्यक्ति की तुलना में बड़ा होगा, और "इसे बुद्ध परिवेश में बुद्ध फा को हानि पहुंचाना" कहा जा सकता है। इसलिए, उन भिक्षुओं पर अंधविश्वास न करें जो वास्तव में साधना नहीं करते हैं। सच्ची साधना, मानव मन की साधना करने में है, और कोई भी व्यक्ति उस आयाम तक नहीं पहुंच सकता जब तक वह अपने मानवीय मोहभावों को त्याग नहीं देता। यदि मनुष्यों को विज्ञान और प्रौद्योगिकी के माध्यम से वहां पहुंचने दिया जाता, वास्तव में अंतरिक्ष युद्ध, ब्रह्मांडीय युद्ध छिड़ सकते थे। बुद्ध यह आपको कैसे करने दे सकते हैं? यह केवल वैज्ञानिक कल्पना है, और कभी वास्तविक नहीं हो सकती। यदि मनुष्य उच्च स्तरों तक पहुंचना चाहते हैं और उच्च प्राणियों को जानना चाहते हैं—यदि आप उच्च स्तर के प्राणी होना चाहते हैं या यदि आप वास्तव में ब्रह्मांड का सत्य जानना चाहते हैं—केवल साधना ही एक माध्यम है। यही एकमात्र मार्ग है। इसलिए मैं आपको बता रहा हूं, साधारण मानव समाज में, आने वाले दिनों में आप चाहे किसी भी चुनौती का सामाना करते हैं—चाहे वे

आपके नैतिक गुण के [परीक्षण] संघर्ष हों, कोई आपको परेशान कर रहा हो, कोई आप का लाभ उठा रहा हो, कोई आपको दबा रहा हो, या आप किसी अन्य रूप से या दूसरों से पीड़ित हों—मैं आपको बताना चाहुंगा, जरुरी नहीं कि यह कोई बुरी वस्तु है। यदि आप वास्तव में साधना करना चाहते हैं, तो मैं आपको बताना चाहुंगा, आपका जीवन मार्ग पुनर्व्यवस्थित किया जाएगा। इसे फिर से व्यवस्थित क्यों किया जाना चाहिए? क्योंकि मनुष्य के पास उसका मानव जीवन होता है और साधना करने से पहले उसका भविष्य एक साधारण व्यक्ति का होता है, और कौन जानता है कि उसकी आयु कितनी है? किसी की आयु दूसरों से अधिक हो सकती है, किन्तु कोई नहीं जानता कि ऐसे लोग कब गंभीर रुप से अस्वस्थ होंगे या कितने वर्ष अस्वस्थ रहेंगे। ऐसे लोग कैसे साधना कर पाएंगे? या कुछ लोग कुछ कठिन परीक्षाओं से गुजर सकते हैं—और ऐसी परिस्थितियां साधना को असंभव बना सकती हैं। मैं आप सभी के लिए राह सुगम कर दूँगा, उन सभी वस्तुओं को हटा दूंगा और साधना का मार्ग प्रशस्त करूँगा। बेशक, यह साधारण लोगों के लिए नहीं किया जाएगा। यह केवल साधकों के लिए ही किया जा सकता है।

तो साधक इतने विशेष क्यों हैं? ऐसा इसलिए है क्योंकि मनुष्य का जीवन मानव होने के लिए नहीं है। आपका जीवन इस धरती से नहीं आता है; आपका जीवन उच्च आयामों से आता है। वापसी ही आपके जीवन का उद्देश्य है, इसलिए जब साधना की इच्छा उत्पन्न होती है, तो यह सोने से भी अधिक प्रकाशवान होती है, और दसों दिशाओं वाले विश्व में बुद्ध इसे देख सकते हैं। जब मनुष्य को यह विचार आता है—साधना का विचार—यह बहुत मूल्यवान होता है। साधारण लोगों के लिए कुछ ऐसे ही नहीं किया जा सकता है, क्योंकि आमतौर पर साधारण लोगों ने अपने पिछले जीवन में अच्छी वस्तुएं नहीं की हैं, और उन्हें इस जीवन में उनका भुगतान करना होगा। यदि आप उनके बुरे कर्म को ऐसे ही हटा देते हैं और उनकी परीक्षाओं को हटा देते हैं, इसका मतलब यह होगा कि लोग बिना दण्ड के बुरी वस्तुएं कर सकते हैं। यह बुद्ध सिद्धांतों और दिव्य नियमों को क्षीण कर देगा। उसे कैसे होने दिया जा सकता है? किसी भी तरह से नहीं। बुद्ध, ताओ, और दिव्य ब्रह्मांड के सिद्धांतों की रक्षा कर रहे हैं और ज़न, शान, रेन के फा सिद्धांतों की रक्षा सुनिश्चित कर रहे हैं। यही कारण है, मैं कहता हूं कि जब आप, साधक, कुछ पीड़ित होते हैं या जब आपका सामना कठिनाई से होता है, तो आपको चार वस्तुएं मिलेंगी। जब दूसरे आपको नीचा दिखाते हैं, जब वे आपका लाभ उठाते हैं, या जब वे आपकी वस्तुओं पर अधिकार जमाते हैं, तो बदले में वे आपको सदगुण देंगे और यह [वस्तुएं जो आप प्राप्त करते हैं] और भी अधिक लाभ में बदल दीं जायेंगी। और जब आप पीड़ित होते हैं, तो आप वह हैं जिसकी हानि हुई है, और आप वह हैं जो पीड़ित होते हैं, इसलिए आपके शरीर के बुरे कर्म को सदगुण में बदल दिया जाएगा। जितना आप पीड़ित होते हैं उतने ही सदगुण की मात्रा बदली जाएगी। इसके अलावा, आप एक साधक हैं, और आप संघर्षों को दूसरों की तरह नहीं लेते हैं। आप अन्य लोगों की तरह मन में द्वेष नहीं रखते, इसलिए आपका *गोंग* बढ़ जायेगा। ऐसा क्यों है? ऐसा इसलिए है क्योंकि आपके नैतिक गुण में सुधार हुआ है। आपके नैतिक गुण का स्तर जितना ऊंचा होगा, आपका *गोंग* भी उतना ही ऊंचा होगा—वास्तव में यही सत्य है। यह संभव नहीं है कि आपका *गोंग* ऊंचा हो जाए चाहे आपके नैतिक गुण में सुधार नहीं हुआ हो, क्योंकि यह फा ब्रह्मांड के सभी प्राणियों को नियंत्रित करता है। इस ब्रह्मांड में सभी पदार्थों में जीवन है, और वे सभी *ज़न शान रेन* द्वारा बनाए गए हैं। इसलिए वे भी मनुष्यों को रोक रहे हैं, और जब आप आदर्शों को पूरा नहीं करते हैं, तो सभी तत्व आपको आगे बढ़ने से रोक देंगे। यह इस सिद्धांत की तरह है जो मैंने पहले समझाया था : यदि एक बोतल जो गंदगी से भरी हुई है उसे पानी में फेंक दिया जाता है, "डुबुक"—वह सीधे नीचे चली जाएगी। उसकी गंदगी को थोड़ा बाहर निकालें और वह थोड़ी ऊपर आएगी; थोड़ी और बाहर निकालें, यह थोड़ी और ऊपर आएगी। बोतल की सारी गंदगी बाहर निकाल दें,

और वह तैरने लगेगी, चाहे आप उसे जितना भी नीचे दबाएं तब भी यह पानी की सतह पर ही तैरेगी और इसे ऐसा ही होना चाहिए। यदि आप वास्तव में साधना करते हैं, तो यह गंदगी को बाहर निकालने जैसा है : जिस मात्रा में सफाई होगी उतना ही यह निर्धारित करेगा कि साधना में आप कहां तक पहुंचे हैं। यह इसी तरह काम करता है।

मैं और भी बहुत कुछ बताना चाहता था। क्योंकि मैं चाहता था कि सभी को फा की प्राप्ति में मदद मिले, मैं सभी को कई बातें बताना चाहता था जब मैंने बात करनी शुरु की। बेशक, मैं आपको वह सब कुछ नहीं बता सकता जो मैं चाहता था जब समय इतना सीमित है। *ज़ुआन फालुन* पुस्तक में कई व्याख्यानों की सामग्री है जो अभ्यास मैंने चीन में सिखाये थे। मैंने उन्हें एक पुस्तक में संकलित किया है और इसे प्रकाशित होने से पहले संशोधित भी किया है। इसलिए यह वह फा है जो व्यवस्थित रूप से साधकों का मार्गदर्शन करता है। अब मेरे व्याख्यान के ऑडियो और वीडियो टेप उपलब्ध हैं, जिन्हें आप देखकर और सुनकर अपने अभ्यास को और अच्छी तरह से कर सकते हैं।

साथ ही, मैं आप सभी को यह बताना चाहता हूं कि मैंने बुद्ध फा की महान शक्ति और अपनी विभिन्न क्षमताओं को पुस्तक में सम्मिलित किया है, इस फा में। चाहे वे वीडियो, ऑडियो, या पुस्तक हों—जब तक आप इसे देखते हैं, सुनते हैं या पढ़ते हैं, आप परिवर्तनों का अनुभव करेंगे। जब तक आप इसे पढ़ेंगे, आप रोग से बचने में सक्षम होंगे। जब तक आप साधना करेंगे, तब तक आपके शरीर के मूल परिवर्तन होंगे। जब तक आप साधना करते रहेंगे, आप क्षमताओं का विकास करेंगे। और आप दाफा की असीम कृपा देखेंगे, सुनेंगे और अनुभव करेंगे। यदि आप एक सच्चे साधक हैं तो मैं आपको बुद्ध फा की सभी महान शक्तियां दूंगा। जब तक आप साधना करेंगे, आप उन्हें प्राप्त करेंगे। किन्तु, यदि आप साधना नहीं करते हैं, आप उन्हें प्राप्त नहीं करेंगे।

पुस्तक के आंतरिक अर्थ गहरे हैं, और पहली बार पढ़ने पर स्वयं को प्रकट नहीं करेंगे। क्योंकि आपको छोटे-छोटे चरणों में अभ्यास करने के लिए कहा गया है। शुरुआत करते समय, साधारण मानव स्तर पर, इस स्तर पर भी फा है जो साधना में आपकी सहायता करेगा। लेकिन जब आप साधना में आगे बढ़ते हैं तो साधना जारी रखने के लिए वही सिद्धांत उपयोग में नहीं आएंगे। उदाहरण के लिए, जब आप जूनियर हाईस्कूल जाते हैं और यदि आप प्राथमिक स्कूल की पुस्तकें पढ़ते हैं, तब भी आप प्राथमिक विद्यालय के छात्र ही रहेंगे। जब आप कॉलेज जाते हैं और फिर भी आप प्राथमिक स्कूल की पुस्तकें पढ़ते हैं, तब भी आप प्राथमिक विद्यालय के छात्र ही रहेंगे। इसका मतलब है कि जब आप साधना के माध्यम से एक निश्चित स्तर तक पहुंचते हैं, तो उस विशेष स्तर पर फा स्वयं आपका मार्गदर्शन करेगा। केवल इसी तरह आप साधना में आगे बढ़ने में सक्षम होंगे। ज़आन फालुन पुस्तक में, मैंने साधारण मानव स्तर से लेकर ब्रह्मांड के उच्चतम स्तर तक के सिद्धांतों को सम्मिलित किया है। सभी स्तरों के फा सिद्धांतों को पुस्तक में सम्मिलित किया गया है, हालांकि वे सतह पर प्रकट नहीं होंगे। पहली बार पढ़ने पर आप अनुभव करेंगे कि एक अच्छा व्यक्ति कैसे बनना है। जब आप इसे दूसरी बार पढ़ते हैं, तो आप पाएंगे कि यह ऐसा नहीं है। और तीसरी बार पढ़ने के बाद, आप पाएंगे कि यह सच्ची साधना के बारे में एक पुस्तक है। जब आप इसे पढ़ते रहेंगे, आप पाएंगे कि यह एक दिव्य पुस्तक है। एक ही वाक्य के, अलग-अलग स्तरों पर और अलग-अलग आयामों में अलग-अलग समझ और विभिन्न अर्थ होंगे। पुस्तक में शामिल आंतरिक अर्थ अथाह हैं। अभी ऐसे बहुत से लोग हैं जो पुस्तक पढ़ रहे हैं, और कुछ ने इसे सौ बार से ऊपर पढ़ा है और इसे पढ़ना जारी रखा है। भले ही आपने इसे दस हजार बार पढ़ा हो, तब भी आपको नहीं लगता कि इसमें पढ़ने के लिए कुछ और नहीं है। बल्कि, आपको अभी भी पता चलेगा कि ऐसी कई

वस्तुएं हैं जिन्हें आपने पहले अनुभव नहीं किया था, और आप अभी भी कई नयी वस्तुओं को समझेंगे। इसलिए यह पुस्तक अनमोल है। संभवतः मैं यहां इसके सभी पक्ष नहीं बता सकता। यदि आप साधना करना चाहते हैं, तो मुझे लगता है कि आपको इसे तन्मयता से पढ़ना चाहिए और इसे बार-बार पढ़ना चाहिए। तब आप सब कुछ प्राप्त करेंगे। पहली बार पढ़ने के बाद आपके सभी प्रश्नों के उत्तर आपके दूसरी बार पढ़ने से मिल जाएंगे। तब आपके पास नए प्रश्न होंगे, लेकिन जब आप इसे तीसरे बार पढ़ेंगे तो उन सभी प्रश्नों का उत्तर मिल जाएगा। फिर जब आप इसे पढ़ते रहेंगे, तो आपके पास उच्च स्तर के प्रश्न होंगे, और जब तक आप इसे पढ़ते रहेंगे, आपके सभी प्रश्नों को समझाया और उत्तर दिया जाएगा।

मुझे नहीं पता कि मैंने जो कहा वह आपके अनुरूप है या नहीं। (तालियां) मैं चाहता हूं कि आप साधना में प्रगति करें, इसलिए मैंने उच्च स्तर की वस्तुओं के बारे में बताया है। यदि कुछ भी अनुचित है, तो आप इसे बता सकते हैं। आप सभी का धन्यवाद। (तालियों की गड़गड़ाहट)